



MORAL GROUP OF COMPANIES

All Ways Together...

जीवेम शरदः शतम्



स्वास्थ्य सहायक पुरितका

A Prayer For Good Health



# I N D E X

एलोमेर (एलोवेरा जूस)

नोनी

अमृत जूस

एरिफरुलिना

गैनोडर्मा

आमेगा 3, E, 9

मोर ब्यूटी प्लस

शीन मोर

मॉनिंग फ्रेश

हींग वटी

हींग अनार

तुलसामृत ड्रिंक्स

ओलिवो

विटोमैक्स

रति पॉवर

कोलस्ट्रम

फ्रुट पैच

वर्जिन अगेन

फेमोकेयर

परिकल्प

रिलम पॉवर

ग्लोकेयर

केशोसुधा

स्मृतिस्वधा

लिव-मी

मोरोशिल

गैस्टोमोर

डाईजेस्टोमोर

हेमकैल-डी

पाईलोबीट

खांशी

डी-स्टोन

डायबोस्वधा

आर्थोस्वधा

ज्वाइंट रेस्ट

डेन्टा लाइफ प्लस

फ्रेशिया

मोरल प्रोटेक्टो

मैगनेटिक ब्लैसलेट

# एलोमोर

## एलोवेरा जूस



### आयुर्वेद के अनुसार - एलोवेरा के उपयोग

- कब्ज दूर करने में उपयोगी
- पेट के कैंसर को दूर करने में लाभदायक
- प्लीहा के रोगों, प्लीहा कैंसर में लाभदायक
- हेपेटाइटिस और लीवर कैंसर में लाभदायक
- बुखार में लाभदायक
- ट्यूमर कम करने में लाभदायक
- जलने के उपरांत हुए घावों में लाभदायक
- छालों और फोड़ों में लाभदायक
- रक्त स्त्राव में लाभदायक
- त्वचा की बीमारियों में लाभदायक
- विष प्रतिरोधी
- गैस दूर करने में लाभदायक
- शक्तिवर्धक
- कामोद्दीपक
- यौवन कायम रखने वाला
- पित्त के कारण होने वाली खांसी और सर्दी में लाभदायक
- दमा और साँस की तकलीफों में लाभदायक



### इसमें है:

Aloe Barbadensis का 100% स्थाई जूस,  
Honey, Lemon और Ginger  
के extracts

### एलोमोर के स्वास्थ्य लाभ

- ◆कैंसर की रोकथाम करता है और लीवर और प्लीहा को मजबूत करता है।
- ◆पेट की गड़बड़ियों को कम करता है और पाचन को मजबूत करता है।
- ◆गैस और अल्सर को रोकता है और शरीर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है।
- ◆यूरिक अम्ल को कम करके गठिया और गाउट को कम करता है।
- ◆पाइल्स और कब्ज के मरीजों के लिए लाभप्रद है।
- ◆शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
- ◆एलर्जी और त्वचा के रोगों में सहायक व त्वचा के लावण्य और यौवन को बनाये रखता है तथा स्त्रियों के लिए एक अच्छे यूटेराइन टॉनिक का कार्य करता है।
- ◆कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड को कम करता है, जिससे हार्ट-अटैक व मधुमेह की सम्भावना कम होती है।
- ◆उच्च रक्त चाप को कम करता है शरीर के इलेक्ट्रोलाइट का उचित स्तर बनाये रखता है।

**लीवर और तिल्ली** - एलोवेरा लीवर और तिल्ली को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है और उनकी क्रिया को बढ़ाता है। इसलिए इसको एक लीवर टॉनिक के रूप में पीलिया में, लीवर और तिल्ली की सूजन में इस्तेमाल किया जाता है। लीवर और तिल्ली के ऊपर इसके लाभ के कई सन्दर्भ उपलब्ध हैं।

**निर्विषकारक के रूप में** - एलोवेरा के जूस में पोटेशियम पाया जाता है जो लीवर और जिगर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है।

**पित्त नियंत्रक** - एलोवेरा पित्त को नियंत्रित करता है। आयुर्वेद में कहा जाता है कि पित्त दोष के कारण शरीर कई प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो जाता है जैसे - अति अम्लता, अल्सर, पाचन-तंत्र की गड़बड़ी, चर्म-रोग, कमजोर लीवर और गठिया।

**रक्त शोधक** - एलोवेरा में विटामिन-C पाया जाता है जो रक्त संचरण को सुधारता है और हृदय को बेहतर कार्य करने में सहायता देता है। विटामिन-C शरीर की प्रतिरक्षा-प्रणाली, रक्त-संचरण और पाचन-तंत्र के लिए अति आवश्यक है। एलोवेरा इस आवश्यकता की पूर्ति करके शरीर को रोग-मुक्त रखता है।

**हृदय के लिए लाभदायक** - एलोवेरा में रक्त के गाढ़पन को सामान्य बनाए रखने की क्षमता है एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक है। इस कारण यह रक्त-नलिकाओं में थक्के नहीं जमने देता और हृदय को सुचारु रूप से कार्य करने में सहायक है।

**रुखी रोगों में** - एलोवेरा डिम्ब उत्पादन में सहायता करता है। मासिक धर्म को संतुलित रखता है। बालों को झड़ने से रोकता है और मुहासों को रोकने में लाभदायक है।

**खुराक:** 30 से 50ml 1 ग्लास पानी के साथ  
दिन में 2 बार



# नोनी

## गोल्ड जूस

### शक्तिशाली स्वास्थ्य-पेय

यदि आप चाहते हैं कि आप स्फूर्ति और ऊर्जा से हर समय भरपूर रहें, तरो-ताजा महसूस करते रहें, शांत रहें, अच्छी नींद लें, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता सशक्त रहे तो अपने स्वस्थ और सुंदर जीवन के लिए उपयोग करें "मोरल" का प्राकृतिक पौष्टिक सम्पूरक "मोरल नोनी" यह युवाओं और उम्रदराज— सभी उम्र के लिए अत्यंत उपयुक्त है। "मोरल" का नोनी गोल्ड जूस पूर्ण रूप से शुद्ध और हर्बल है और मानव को प्रकृति का दिया गया अनुपम उपहार है। यह स्वस्थ लोगों को सर्वदा स्वस्थ रखने और बीमार लोगों को स्वस्थ बनाने में सहायक है। भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में करोड़ों लोगों द्वारा नोनी का नियमित उपयोग किया जाता है क्योंकि यह शरीर के अंदर के विषैले तत्वों को दूर करने के साथ ही शरीर की कोशिकाओं को मजबूत भी करता है।

नोनी में 100 से भी अधिक न्यूट्रास्यूटिकल्स सूक्ष्म पोषक तत्व, विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। नोनी गोल्ड जूस में शुद्ध रूप से "मोरिन्डा साइटरीफोलिया" नामक फल का सार तत्व होता है, इसमें रसायन, विषैले तत्व, कीटनाशक और वजनी धातुएं आदि की मात्रा बिलकुल नहीं होती है। आयुर्वेद और सिद्धा टेकस्ट में भी इसका वर्णन किया गया है। "मोरिन्डा साइटरीफोलिया" को अंगरेजी में "इंडियन मल्बेरी" कहा जाता है। नोनी गोल्ड जूस 100 प्रतिशत शाकाहारी पूरक आहार है। कहा जाता है। नोनी गोल्ड जूस 100 प्रतिशत शाकाहारी पूरक आहार है।

1. नोनी कोशिकाओं के स्तर पर कार्य करता है और उन्हें स्वस्थ रखने के साथ उनका जीर्णोद्धार भी करता रहता है।
2. नोनी एक शक्तिशाली **de-toxifier** है। कोशिकाओं की दीवारों के ऊपर जमे विषाक्त परतों को दूर कर कोशिकाओं की दीवारों पर के क्षिद्रों को बड़ा कर देता है जिससे प्रोटीन के बड़े चेन जो ऊर्जा के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं, आसानी से उन क्षिद्रों के द्वारा कोशिकाओं में प्रवेश कर जाते हैं। इस अवस्था में कोशिकाएं सरलतापूर्वक पोषक तत्वों और औषधियों को अवशोषित कर लेती हैं जिसके कारण उनका प्रभाव भी अधिक हो जाता है।
3. नोनी प्रोटीन को नियंत्रित करने के साथ ही इसे क्रियाशील भी करती है। अत्यधिक व्यस्तता, बीमारी की अवस्था, तनावपूर्ण जीवनशैली और उम्र बढ़ने की अवस्थाओं में प्रोटीन की अधिक आवश्यकता होती है। कुछ आवश्यक महत्वपूर्ण प्रोटीन जो हारमोंस, एनटीबाडीज और एन्जाय्मस की तरह कार्य करते हैं को अपने कार्य करने के लिए "जीरोनाइन" की आवश्यकता होती है। नोनी में "प्रोजीरोनाइन" प्रचुर मात्रा में मौजूद है जो "जीरोनाइन" का निर्माण करती है। इस प्रकार नोनी **proteen regulator** और **activator**।
4. नोनी एक सुरक्षित दर्दनिवारक (**safe pain-reliever**) है। वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि नोनी चुनिंदा रूप से ब्ग् 2 एन्जाइम को रोकता है और ब्ग् 1 एन्जाइम को अपना कार्य करने देता है। **COX 2** एन्जाइम दर्द और सुजन के लिए उत्तरदायी होता है।
5. नोनी **Cancer** पदीपइपजवत की तरह कार्य करता है। विभिन्न अध्ययनों के आधार पर ऐसा विश्वास किया जाता है कि नोनी में मौजूद "प्रोजीरोनाइनऔर" "डेमनाकेनथल" कैंसर विरोधी घटक हैं। नोनी के नियमित सेवन और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से कैंसर होने की सम्भावना क्षीण हो जाती है।
6. वर्तमान अध्ययनों से पता चलता है कि नोनी स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए अत्यंत लाभदायक है। नोनी में ग्लाइसेमिक सूचकांक (**glycolic index**) निम्नतम है जिसके कारण इसके नियमित उपयोग से डायबीटीज की गंभीर स्थिति से होने वाले जोखिम की सम्भावना कम हो जाती है।
7. उच्च रक्तचाप (**High blood pressure**), हृदय-रोग में नोनी के फायदेमंद होने के कारण हैं रु इसमें मौजूद स्कोपालीटीन रक्त-धमनियों को चौड़ा कर देता है, शरीर के द्वारा नाइट्रिक ऑक्साइड बनाने की प्रक्रिया को प्रेरित करता है स्कोपालीटीन और नाइट्रिक ऑक्साइड रक्त-धमनियों को चौड़ा कर देते हैं। नोनी में मौजूद "जीरोनाइन" रक्त संचार प्रणाली की कोशिकाओं को स्वस्थ रखने में सहायक है।

**खुराक:** 30 से 50ml पानी या शहदके साथ  
रोज 2 बार।

## मोरल नोनी गोल्ड जूस क्यों विशिष्ट या स्पेशल है ।

- 1—इस जूस में "मोरिन्डा साइटरीफोलिया" नामक फल के सार तत्व के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता स्वास्थ्यवर्धक स्वदेशी हर्ब्स भी मिलाये गये हैं ।
- 2—इसके स्वाद को स्वीकार्य और स्वादपूर्ण बनाने के लिए इसमें प्राकृतिक जीरो कैलोरी स्वीटनर जोड़ा गया है ।
- 3—इसमें स्पायरुलिना के भी निहित होने के कारण यह जूस असाधारण रूप से पौष्टिक और स्वादिष्ट है ।

**स्वस्थ जीवनचर्या के संग नोनी जूस या नोनी कैप्स्युल्स का उपयोग करने से आप कई बीमारियों से दूर रह सकते हैं। नोनी के नियमित सेवन से निम्न महत्वपूर्ण फायदे हैं :**

- कमजोर कोशिकाओं का जीर्णोद्धार कर पुनर्जीवित करता है, उन्हें ऊर्जावान बनाता है और उनकी अकडन दूर उन्हें कोमल बनाता है ।
- शरीर की कोशिकाओं के कार्य-कलापों को नियंत्रित करता है ।
- रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है ।
- किसी प्रकार के दर्द और सुजन कम करने में सहायक है ।
- रक्त का शुद्धिकरण ।
- सिर की त्वचा, बाल और त्वचा स्वस्थ रहती है ।
- शरीर के अंदर से विषैले तत्व दूर होते हैं ।
- संतुलित रक्त-संचार और पाचन तन्त्रण स्वस्थ स्नायु तन्त्र ।
- उच्च रक्त-चाप, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड सुगर नियंत्रित करने में सहायक ।
- तनावमुक्त जीवन और अच्छी नींद ।
- स्त्रीयों के अनियमित या अधिक या दर्दयुक्त माहवारी से राहत देने में सहायक ।
- कैंसर से बचाव ।
- मसूड़ों की सुजनए एलर्जी से राहत ।
- गठिया, कोलायटिस, एक्जिमा, त्वचा की बीमारियाँ, कुछ थायरोइडकी बीमारियों, मधुमेह, दमा के रोगियों को
- नोनी के उपयोग से लाभ ।
- हारमोन्स-असंतुलन में लाभदायक ।
- दवाओं के अलावा नोनी के नियमित सेवन से नोनी का सहायक के रूप में कार्य ।



**इसमें है:**

100% नोनी (Morinda citrifolia),  
Aloe barbadensis, Turmeric,  
Stevia, E330, E300, E202

**पैक : 500ml**

मोरल का नोनी गोल्ड जूस मोरिंडा सिट्रीफोलिया नामक पौधे के फलों से प्राप्त किया जाता है। यह जूस बीमार व्यक्तियों को स्वस्थ बनाता है और स्वस्थ व्यक्तियों को निरंतर स्वस्थ बनाये रखता है। नोनी पर विश्व के 6 देशों के 30 विश्वविद्यालयों में शोध किया गया है। शोध में पाया गया है कि नोनी शरीर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है और शरीर की कोशिकाओं को मजबूत बनाता है। अतः आज सम्पूर्ण विश्व में नोनी का उपयोग लाखों व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है और इसके परिणाम चमत्कारिक हैं।

### नोनी में 2 प्रमुख अवयव पाए जाते हैं – प्रोजीरोनाइन और प्रोजीरोनेस

1. प्रोजीरोनाइन – यह प्रोजीरोनेस के साथ क्रिया करके जीरोनाइन का उत्पादन करता है।
2. जीरोनाइन – शरीर के प्रोटीन्स के साथ जुड़कर उन्हें भली-भाँती कार्य करने में सहायता करता है।
3. प्रोटीन द्वारा सुचारू रूप से कार्य करने के कारण प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। इससे शरीर बीमारियों से लड़ने में सक्षम होता है।

### नोनी के मुख्य लाभ

1. नोनी जूस शरीर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है।
2. शरीर की कोशिकाओं को नवजीवन प्रदान करता है।
3. शारीरिक तंत्र को स्वस्थ रखता है।
4. जीवाणुओं-विषाणुओं के हमले से बचाव करता है।
5. भोजन और दवाओं के बेहतर अवशोषण में सहायक है।
6. रक्त को शुद्ध करता है।
7. अच्छी निद्रा में सहायक है।
8. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है।
9. अवसाद और तनाव को कम करता है।
10. याददाश्त बढ़ाता है और ध्यान केन्द्रित करने में सहायक है।
11. यह त्वचा और बालों को स्वस्थ और चमकीला रखता है।
12. यह बढ़ती उम्र के साथ होने वाली व्याधियों (गठिया, हृदय रोग, मधुमेह) को रोकने में सहायक है।

- अनिद्रा
- शारीरिक दुर्बलता
- उच्च रक्तचाप
- गठिया
- तनाव
- मोटापा
- गुर्दा रोगों में
- लकवा
- मधुमेह
- हृदय रोग
- यौन दुर्बलताओं में
- मानसिक दुर्बलता
- सांस की बीमारियों में
- कैंसर
- पाचन तंत्र से सम्बंधित बीमारियों में
- एल्जाइमर

# अमृत जूस



**Contains: 100 % stabilized juice of aloe vera enriched with**

*Aegle marmelos*

*Curcuma longa*

*Ocimum sanctum*

*Emblica Officinalis*

*Glycyrrhiza glabra*

*Stevia*

*Spirulina*

*Murraya koenigii*

*Mentha arvensis*

*Cynodon dactylon*

*Casearia esculenta*

*Cinnamon*

*Morinda citrifolia*

*Aloe barbadensis*

अमृत जूस एक आयुर्वेदिक जूस है जो शरीर को स्वस्थ, तंदरुस्त तथा सुरक्षित रखता है। अमृत जूस सभी के लिए अति उपयोगी तथा 12 जड़ीबूटियों का मिश्रण है। इसका उपयोग खासी, सर्दी जुकाम से बचने के लिए, जखम तेजी से भरने के लिए, मधुमेह से बचाव के लिए तथा कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के लिए करते हैं। यह शारीरिक मजबूती देता है तथा चुस्त रखने में सहायता करता है, संक्रमण कम करता है तथा आँखों से सम्बन्धित समस्याएं दूर करता है।

## अमृत जूस के लाभ

- इसके प्रयोग से गले के रोगों एवं कफ और सर्दी को दूर करने में मदद मिलती है।
- डायबिटीज से बचाव करता है।
- रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है।
- रक्त शोधक है।
- याददाश्त बढ़ाता है।
- आँखों की कमजोरी दूर करता है, दृष्टि दोष में लाभदायक
- भूख बढ़ाता है, रक्त का निर्विषीकरण करता है।
- श्वसन तंत्र को मजबूत करके दमा दूर करने में मदद करता है।
- कोलेस्ट्रॉल कम करके रक्त चाप नियंत्रित करता है।
- शारीरिक एवं मानसिक थकावट दूर करके स्वस्थ और तरोताजा बनाता है।

**पैक :**

**500ml+100ml  
FREE**

**उपयोग विधि :** गुनगुने पानी के साथ 30-50ml  
दिन में दो बार



## एरिंपरूलिना एस्टैजैन्थिन

स्पाईरूलीना एक सूक्ष्मजीवी नीला-हरा शैवाल है जो वनस्पति-प्रोटीन, लौह तत्व, प्रो-विटामिन-A कैरैटीनायडस, विटामिन-A, विटामिन B-1, B-2, B-3, B-6, B-12, विटामिन-C, विटामिन-D, विटामिन-E, फोलेट, बायोटिन, पैंटोथेनिक एसिड, बीटा कैरोटीन (विटामिन-A का स्रोत), इनोसिटोल, आवश्यक एमीनो एसिड और दुर्लभ आवश्यक फैटी एसिड – G. L. M. (गामा लीनोलिनिक एसिड) का एक समृद्ध स्रोत है। अध्ययन बताते हैं कि स्पाईरूलिना और उनके उत्पादों में महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट गुण हैं | यह चयापचय, डीटोक्सीफिकेशन और प्रतिरक्षा-प्रणाली को सहयोग देता है साथ ही सूजन और एलर्जी को कम करता है।

### स्पाईरूलीना के स्वास्थ्य लाभ

- साधारण भोजन में लाइसिन, थियोनिन और मिथिओनिन का अभाव होता है। स्पाईरूलीना में ये एमीनो एसिड प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जो स्वस्थ बच्चों के विकास में मदद करते हैं। शिशु जो स्तन-पान नहीं कर पाते हैं, उन शिशुओं के स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। स्पाईरूलीना में विटामिन B-12, पशुओं के जिगर की तुलना में 3 गुना अधिक है। विटामिन B-12 स्वस्थ नसों के लिए आवश्यक है।
- स्पाईरूलीना में उम्र-रोधी कई तत्व हैं जैसे – बीटा कैरोटीन, विटामिन-E, G. L. A., सुपरऑक्साइड डिसम्यूटेस, इत्यादि। जहां एक तरफ, ये तत्व अपनी एंटी-ऑक्सीडेंट गतिविधियों के माध्यम से मुक्त कणों (Free Radicals) को नष्ट करते हैं, वहीं दूसरी ओर, जननपिंडों का विघटन रोकते हैं और वसा के आधिक्य और धमनीकाठिन्य को रोकने में मदद करते हैं।
- स्पाईरूलीना में उपलब्ध पोलिसेकराइड्स एक प्राकृतिक मानव प्रतिरक्षा-प्रणाली सहायक है। यह मज्जा कोशिकाओं, थाइमस और तिल्ली के कार्यों की उत्पादकता में सुधार और सीरम प्रोटीन के संश्लेषण के द्वारा मानव प्रतिरक्षा-प्रणाली को बढ़ाता है।
- स्पाईरूलीना क्लोरोफिल, सेरीन, सिलवाइट और विटामिन B-6 से भरपूर है जो सिनकालिन के संश्लेषण में सहायक है और रक्तचाप को कम करता है। रक्त के अतिरिक्त गाढ़ेपन को कम करता है, रक्त धमनियों को मुलायम और स्वस्थ रखता है।
- स्पाईरूलीना में पाया जाने वाला G.L.A. रक्त में कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक है और हृदय रोगों और पक्षाघात को रोकने में सहायक है।



### Each Capsule Contains:

•Spirulina	496mg
•Astaxanthin	4mg
•Protein	Trace
•Fat	Trace
•Carbohydrate	Trace

**खुराक:** 2 कैप्सूल्स 1 ग्लास पानीके साथ दिन में 1 या 2 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार



# गैनोडर्मा

चमत्कारी नोनी के साथ



## गैनोडर्मा लुसिडम

गैनोडर्मा लुसिडम एक प्राचीन काल से उपयोग में आने वाला मशरूम है जिसे चीन, जापान और दूसरे एशियाई देशों में स्वास्थ्य को उत्तम करने वाली औषधि के रूप में लाभदायक पाया गया है। गैनोडर्मा लुसिडम को आध्यात्मिक शक्ति का पौधा कहा जाता है। गैनोडर्मा एक बड़ा और कड़वा मशरूम है जिसकी बाहरी सतह चमकीली होती है। गैनोडर्मा विश्व के उष्ण-कटिबंधीय और समशीतोष्ण क्षेत्र के घने-अंधेरे पहाड़ी जंगलों में उगते हैं।

गैनोडर्मा के सार में पौलीसेकराइड्स और एक ट्राईटैरपिन-गैनोडेरिक एसिड पाया जाता है। यह दोनों घटक शरीर की प्रतिरोधक-प्रणाली को उत्प्रेरित करते हैं और साथ ही रक्त में थक्कों के आधिक्य को रोकते हैं जिससे हृदयाघात होने का खतरा कम हो जाता है। इसके अलावा गैनोडर्मा में एलर्जी, रक्तचाप, फोड़ो, दमा, सर्दी-जुकाम और गठिया को रोकने की क्षमता पाई जाती है।



## गैनोडर्मा के प्रत्येक कैप्सूल में पाए जाने वाले प्रमुख संयोजक

गैनोडर्मा लुसिडम (रेजिन एक्सट्रैक्ट)	: 250 mg
नोनी एक्सट्रैक्ट	: 250 mg
प्रोटीन	: स्वल्प मात्रा
वसा	: स्वल्प मात्रा
कार्बोहाइड्रेट	: स्वल्प मात्रा
कोलेस्ट्रॉल	: 0 mg

## गैनोडर्मा के लाभ

- ✦ गैनोडर्मा एक एंटी-ऑक्सिडेंट का कार्य करता है। इसका यह गुण पाये जाने वाले पौलीसेकराइड्स और फीनॉल के कारण होता है।
- ✦ गैनोडर्मा कोशिकाओं के स्तर पर पी0एच0 स्तर को संतुलित रखता है।
- ✦ गैनोडर्मा इन्सुलिन के प्रभाव को बढ़ता है।
- ✦ यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और लिवर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है।
- ✦ गैनोडर्मा कोलेस्ट्रॉल को कम करता है और उच्च-रक्तचाप को कम करता है।
- ✦ यह नसों और रक्त-नलिकाओं को लचीला बनाए रखता है।
- ✦ यह फेफड़ों द्वारा ऑक्सीजन के बेहतर इस्तेमाल में सहायक है।
- ✦ कीमोथेरेपी द्वारा उत्पन्न साइड-इफेक्ट्स उल्टी, सिरदर्द, बुखार, बालों का झड़ना, वजन कम होना को कम करता है।
- ✦ अनिद्रा, एलर्जी और थकान से छुटकारा दिलाता है और ध्यान केन्द्रित करने में सहायक है।
- ✦ प्रोस्टेट कैंसर के खतरे को कम करता है।

**खुराक:** रोजाना दो कैप्सूल्स 1 ग्लास जल के साथ दिन में 1 या 2 बार



## ओमेगा 3, 6, 9

### ओमेगा 3, 6, 9 शरीर की विभिन्न प्रणालियों को EPA और DHA की संतुलित मात्रा द्वारा स्वस्थ रखता है।

ओमेगा 3, 6, 9 एक ऐसा पोषकत्व है जिसमें वनस्पतियों से प्राप्त ओमेगा 3, 6 और 9 का अद्भुत सम्मिश्रण है जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है। ओमेगा 3 फैटी एसिड्स शरीर के लिए अति आवश्यक हैं क्योंकि शरीर इनका स्वयं उत्पादन नहीं कर पाता। लेकिन यह शरीर के सुचारु चयापचय के लिए आवश्यक हैं। ओमेगा 3 फैटी एसिड्स कई प्रकार के होते हैं — जैसे E.P.A., D.H.A. और A.L.A.। पौधों और मछलियों में A. L. A. ओमेगा 3 एसिड्स पाए जाते हैं जो मनुष्य के शरीर में D.H.A. और E.P.A. में तब्दील होते हैं। मोरल का ओमेगा 3, 6, 9 पौधों से प्राप्त किया गया ओमेगा 3, ओमेगा 6 और ओमेगा 9, वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित फैटी एसिड्स के सही अनुपात में है। अतः यह स्वस्थ कोशिकाओं, त्वचा, केश और नाखून के विकास में सहायक है।

### ओमेगा 3, 6, 9 के महत्वपूर्ण कार्य और लाभ

- यह यकृत और जिगर को सुचारु रूप से कार्य करने में सहयोग देता है और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है।
- यह शरीर में बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल, रक्त-चाप, मधुमेह और गठिया को कम करके हृदय को मजबूत बनाता है और नसों को मजबूत करता है।
- यह बार-बार होने वाले प्राकृतिक गर्भपात को रोकता है और रक्त और मस्तिष्क में जमने वाले थक्कों को रोकता है।
- यह शरीर में कैल्शियम की मात्रा को बढ़ाता है और हड्डियों को मजबूत करता है।
- यह शरीर में H.D.L. (लाभदायक फैट) की मात्रा को बढ़ाता है और L.D.L. और ट्राइग्लिसराइड (हानिकारक फैट) की मात्रा को घटाता है।
- यह स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए लिए काफी लाभप्रद है क्योंकि यह उनका मानसिक विकास करता है और स्मरण-शक्ति और शारीरिक ऊर्जा बढ़ाता है।
- यह दमा के मरीजों के लिए लाभदायक है क्योंकि यह फेफड़ों को मजबूत बनाता है।
- यह रजोनिवृत्ति से पूर्व होने वाली समस्याओं को कम करने में सहायक है।
- यह कई तरह के कैंसर (आतों के कैंसर, स्तन कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर) की रोकथाम में प्रभावी है।
- यह जोड़ों की जकड़न को कम करता है इसलिए गठिया के मरीजों के लिए अति लाभकारी है।
- यह नसों को मजबूत करता है।
- यह रक्त-संचार को सुचारु बनाता है।



### High Potency. Health Enhancer

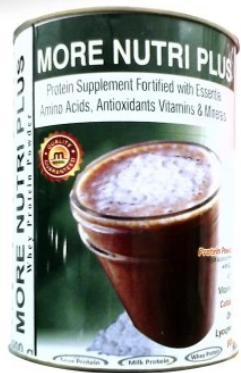
Contents	Amount per Serving
Protein	0.00g
Carbohydrate	0.00g
Fat	0.87g
Folic Acid	5mg
Omega 3 fatty acids	165mg
Omega 6 fatty acids	45mg
Omega 9 fatty acids	60mg
Docosahexaenoic Acid(DHA)	200mg

पैक:

60 सॉफ्टजेल्स

**स्थिराक:** एक सॉफ्टजेल कैप्सूल दिन में दो बार  
या चिकित्सक के परामर्शानुसार

# मोर-न्यूट्री प्लस



मोर न्यूट्री प्लस एक ऐसा प्रोटीन पाउडर है जो सोया प्रोटीन आइसोलेट से बना है। यह शुद्ध सोयाबीन और दूध से निर्मित है इसमें कोशिका के निर्माण की क्षमता अधिक है ये तीव्रता से शारीरिक वृद्धि करता है तथा शरीर के सभी तंत्रों को उत्तेजित करके कार्य करता है। इस पाउडर में दूध की शक्ति है जो कि हड्डियों को मजबूत करती है तथा उत्तकों का निर्माण तीव्रता से करती है तथा इसमें डी0 एच0 ए0 मिला हुआ है जो दिमाग तेज करता है और दिमाग का निर्माण तथा स्मरण शक्ति बढ़ाने का कार्य करता है। फ्रुक्टो ओलिगो सेकराइड शून्य कैलोरी देने के साथ-साथ मीठा स्वाद भी देने का कार्य करता है। यह सभी के लिए सुरक्षित है तथा कभी भी कहीं भी इस्तेमाल करने के योग्य है। इसे दूध के साथ, गुनगुने पानी के साथ, फलों के जूस के साथ तथा दाल के पानी के साथ सरलता से सेवन किया जा सकता है। इसमें विटामिन और मिनरल्स मिले हैं जो हड्डियों को मजबूत करते हैं तथा पाचन तंत्र ठीक करने का कार्य करते हैं। बच्चों में इसकी कमी से कई रोग हो जाते हैं लेकिन इस पाउडर के सेवन से बच्चों को रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है। सुरक्षित और इस्तेमाल बस सुबह और शाम दस ग्राम इस पाउडर का सेवन करें। इसके मुख्य तत्व सोया प्रोटीन आइसोलेट, मिल्क प्रोटीन, विटामिन्स, मिनरल्स, एमिनो एसिड्स, डी एच ए तथा लाइकोपिन हैं।

## मोर-न्यूट्री प्लस के लाभ

- कोशिकाओं का नव निर्माण
- कुपोषण से सम्बंधित रोग दूर करने में सहायक
- प्रदुषण से रक्षा करता है।
- बुद्धिर्वद्धक
- बच्चो की लम्बाई बढ़ाने में उपयोगी
- तनाव मुक्त करने में लाभकारी
- कुपोषण में विटामिन और मिनरल्स की पूर्ति
- मांस पेशियों का विकास
- रक्ताल्पता दूर करता है
- हड्डियों को मजबूत करे
- शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- कोशिकाओं को लम्बे समय तक सुरक्षित रखता है
- स्मरण शक्ति बढ़ाने में सहायक
- पाचन तंत्र स्वस्थ रखता है।

## Each 2 seving of 15gm Contains ( Approx)

### NUTRIENTS

### Per100g

• Energy	101.4 Kcal
• Protein	52.23gm
• Carbohydrate	42.3gm
• Of which sugar	18.33gm

### VITAMINS

• Choline Bitartrate	65mg
• Vitamin-C	50mg
• Vitamin E Acetate 50% Powder	20mg
• Vitamin K3	10mg
• Vitamin B1	5mg
• Vitamin B2	5mg
• Vitamin B6	4mg
• Calcium Pantothenate	3mg
• Folic Acid	1.5mg
• Biotin	150mcg
• Vitamin B12	10mcg
• Vitamin A Acetate	2500 iu
• Vitamin D3	200 iu

### MINERAL

• Calcium Gluconate	
• Magnesium Chloride	500mg
• Ferrus Fumarate	12mg
• Zinc Sulphate	5mg
• Copper Sulphate	5mg
• Chromium Trichloride	2.5mg
• Sodium Selenate	75mcg
• Manganese Chloride	60mcg
• Potassium Iodide	4mcg
	2.5mg

### ESSENTIAL AMINO ACIDS

• L-Phenylalanine	752mg
• L-Isolucine	696mg
• L-Lycine	544mg
• D-Methionine	544mg
• L-Valine	432mg
• L-Lucine	408mg
• L-Theonine	320mg
• L-Tryptophan	104mg

पैक :  
200g

उपयोग विधि : 1 मग में 200ml ठंडा या गुनगुना दूध डाल कर 2-3 चम्मच मोर-न्यूट्री प्लस मिलायें आवश्यकतानुसार चीनी डाल कर इसे खूब मिलायें और सेवन करें।



## मोर हेल्थ ग्रीन टी

### ग्रीन टी के सेवन से 15 फायदे :

- **ग्रीन टी और कैंसर :** ग्रीन टी में पाये जाने वाले एंटी ऑक्सीडेंट विटामिन **C** और विटामिन **E** जिसमें विटामिन सी अन्य विटामिन **C** से 100 गुना ज्यादा और विटामिन **E** अन्य विटामिन **E** से 25 गुना ज्यादा प्रभावशाली है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है यही कारण है कि कैंसर कोशिका को खत्म कर के शरीर कोशिका को डेमेज होने से बचाता है ।
- **ग्रीन टी और हृदय रोग :** कोलेस्ट्रॉल कम कर के हृदय घात और हृदय रोगों से बचाता है हृदय घात के बाद हृदय कोशिकाओं को सुरक्षित कर के उनकी मृत्यु दर कम करता है ।
- **ग्रीन टी और एंटी-एजिंग :** ग्रीन टी में प्राप्त एंटी ऑक्सीडेंट पाली फेनोल्स फ्री रेडिकल्स के विरुद्ध लड़ते हैं और त्वचा को जवान रखने के साथ साथ त्वचा को दीर्घायु देते हैं ।
- **ग्रीन टी और वजन घटाव :** प्रति दिन 70 कैलोरी जला कर एक वर्ष में 7 पौंड वजन कम करता है साथ में चयापचय क्रिया को बढ़ा कर वसा साथ जलाने का कार्य करता है ।
- **ग्रीन टी और त्वचा :** फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान जो कि झुर्रियों और त्वचा पर उम्र का ढलाव जाहिर करते हैं उनसे लड़ने के लिए ग्रीन टी में प्राप्त एंटी ऑक्सिडेंट्स उनके अति दुष्प्रभाव को दूर कर के एजिंग एवं स्किन कैंसर से बचाता है ।
- **ग्रीन टी और कोलेस्ट्रॉल :** कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम कर के अच्छे और बुरे कोलेस्ट्रॉल में सामंजस्य बनाता है ।
- **ग्रीन टी और मोटापा :** ग्लूकोस को वसा में बदलने से रोक कर मोटापा कम करने में मदद करता है ।
- **ग्रीन टी और डायबिटीस :** लिपिड और ग्लूकोस का मेटाबोलिज्म बढ़ा कर ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल करता है ।
- **ग्रीन टी और पार्किंसंस :** एंटी ऑक्सीडेंट्स कि वजह से दिमाग कि कोशिकाओं का डैमेज रोकता है जिससे पार्किंसंस में मदद मिलती है ।
- **ग्रीन टी और यकृत रोग :** रिसर्च बताते हैं कि ग्रीन टी यकृत में वसीय फ्री रेडिकल्स को खत्म करके जिसकी वजह से यकृत के फेल होने का खतरा कम हो जाता है ।
- **ग्रीन टी और उच्च रक्त चाप : Angiostenia** को रि प्रोसेसिंग कर के रक्त चाप कम करता है और नियंत्रित करता है ।
- **ग्रीन टी और ब्लड शुगर :** ग्रीन टी में प्राप्त पाली फिनोल्स और पाली सेकराइड्स ब्लड शुगर का लेवल नियंत्रित करता है जो कि उम्र के साथ साथ बढ़ाता है ।
- **ग्रीन टी और रोग प्रतिरोधक :** पाली फेनोईलस और फलविनोइड्स रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करते हैं और संक्रमण करने वाले बैक्टेरिया और वायरस के विरुद्ध रोग प्रतिरोधकतंत्र मजबूत करते हैं ।
- **ग्रीन टी और अस्थमा : Theophylline** होने के कारण श्वसन नाली को सपोर्ट करता है एवं अस्थमा से बचाव करता है ।
- **ग्रीन टी और तनाव : L - the theanine** यह एक एमिनो एसिड है जो कि तनाव और कमजोरी दूर करता है और ये एमिनो एसिड ग्रीन टी में पाया जाता है ।



**उपयोग विधि :** यदि इसके 3 से 4 कप रोजाना इस्तेमाल किये जाये तो स्वास्थ्य को बढ़िया परिणाम देती है ।

**Contains :** Green Tea Extract, with Active Polyphenols (Phyto Nutrients), Ashwagandha, Bramhi, Alovera, Shankhpushpi, Yestimadhu, Tulsi, Cardamom, Black pepper, Lemon Grass, Ginger, Clove, Mint, Sucralose

# ग्रीन मोर



**घटक :**  
कार्बनिक ग्रीनमोर मिश्रण

**ग्रीनमोर में है:**  
बार्ली ग्रास, गेहूं ग्रास,  
एल्फा, स्पायरुलिना

**पैक**

60 टेबलेट्स

कैंसर प्रतिरोधी क्षमता में वृद्धि करता है स्नायु तंत्र की प्रक्रिया को व्यवस्थित करके हृदय रोगों के खतरे को कम करता है, प्रोटीन उत्तकों को निर्माण कर शरीर को स्वस्थ एवं मजबूत बनाने में मदद करता है। स्नायु तंत्र प्रक्रिया को व्यवस्थित करने में सहायक जिससे रसायनिक दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। नर्वस सिस्टम और प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है और प्रजनन तंत्र को मजबूत करता है। स्नायु तंत्र प्रक्रिया को व्यवस्थित करता है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, आंतरिक शरीर को शुद्ध बनाये रखने में प्रभावी जिससे कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है, खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाने में सहायक है।

- **क्लोरोफिल-** कैंसर प्रतिरोधी क्षमता में वृद्धि करता है रक्त संचार को ठीक करता है, खून की कमी को दूर करता है और घावों को तेजी से भरने में मदद करता है।
- **फ्लेवोन्वायड्स-** स्नायु तंत्र की प्रक्रिया को व्यवस्थित करके हृदय रोगों के खतरे को कम करता है, उच्च रक्त चाप को नियंत्रित रखता है और बैक्टीरिया तथा वायरस के दुष्प्रभावों को कम करता है।
- **एमिनो एसिड-** प्रोटीन उत्तकों को निर्माण कर शरीर को स्वस्थ एवं मजबूत बनाने में मदद करता है।
- **एन्जाइम्स-** स्नायु तंत्र प्रक्रिया को व्यवस्थित करने में सहायक जिससे रसायनिक दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है।
- **आवश्यक पोषक एसिड-** स्नायु तंत्र की सुचारु प्रक्रिया जो हृदय को स्वस्थ बनाये रखता है, नर्वस सिस्टम और प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है और प्रजनन तंत्र को मजबूत करता है। करता है और प्रजनन तंत्र को मजबूत करता है।
- **विटामिन्स-** व्यवस्थित स्नायु तंत्र की प्रक्रिया दृष्टि दोष में प्रभावी, शरीर के लिए महत्वपूर्ण टिशू को मजबूत करने में सहायक, किसी भी प्रकार के घावों को जल्द भरने में सहायक, शुद्ध रक्त निर्माण में प्रभावकारी, मानव शरीर की पूरी संरचना और तंत्रिका प्रक्रिया को मजबूत एवं व्यवस्थित रखने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रजनन तंत्र को व्यवस्थित एवं मजबूत बनाने में भी इनका योगदान है।
- **मिनरल्स-** स्नायु तंत्र प्रक्रिया को व्यवस्थित करता है जिससे पूरी शारीरिक प्रक्रिया को ठीक रखने में मदद मिलती है।
- **सैपोनिंस-** शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, आंतरिक शरीर को शुद्ध बनाये रखने में प्रभावी जिससे कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है और कैंसर जैसी बीमारियों से बचाव होता है।

## समिश्रण:

सन-बीज, सीसम-बीज, सूरजमुखी-बीज, तुलसी, अश्वगन्धा, टरमेरिक (हल्दी), आमला, पिपली, मेथी-बीज, अजवायन .

## उत्तम पाचक समिश्रण

## ग्रीनमोर के अन्य घटक :

मैग्नेशियम स्टीअरेट , सिलिकोन डायआक्साईड, जैन्थम गम, स्टार्च और एच.पी.एम.सी

**खुराक-** 2 टेबलेट्स दिन में 2 बार गुनगुने पानी के साथ (विशेषतः खाली पेट में, भोजन के पहले).



## मॉर्निंग फ्रेश लेस

### स्वर्णपत्री

लिवर को उचित एन्जाइम्स स्रावित करने के लिए उत्प्रेरित करता है।  
अपच के कारण हुए चयापचय में असंतुलन को दूर कर फिर से संतुलित करने  
और रक्त को शुद्ध करने में सहायक है।  
आंत के पेशियों की लहरीली गति बढ़ाता है।  
कब्ज और अपच की शिकायत शीघ्रता से दूर करता है।  
यह पेचिश की शिकायत दूर करने में बहुत लाभदायक है और उत्तम वायुनाशी तथा लैक्सेटिव भी है।

**ब्लैक साल्ट या काला नमक** अपच, कब्ज, तने हुए पेट, गैस, गैस न निकलने की शिकायत  
और हृदयदाह(heartburn) में अत्यंत उपयोगी है।

### रेंक साल्ट या सेंधा नमक

सेंधा नमक रक्त विकार आदि के रोग जिसमें नमक खाने को मना हो उसमें भी इसका उपयोग  
किया जा सकता है।  
यह पित्त नाशक और आंखों के लिये हितकारी है।  
दस्त, कृमिजन्य रोगों और रहुमेटिज्म में काफी उपयोगी होता है।  
हड्डियों को मजबूत रखता है।  
मांसपेशियों में ऐंठन की समस्या सेंधा नमक के सेवन से ही ठीक हो सकती है।  
पाचन तंत्र को ठीक रखता है।  
पित्त की पत्थरी व मूत्रपिंड को रोकने में सेंधा नमक और दूसरे नमकों से बेहद उपयोगी है।  
पानी के साथ सेंधा नमक लेने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है।

### लघु हरिटाकी

हरिटाकी में कड़े मल को मुलायम करने, पाचन तन्त्र को जीवंत करने, पेट साफ़ करने, और  
बाँधने की क्षमता होती है।  
पेट और आंत.सम्बन्धी बीमारियों, ट्यूमर्स, बबासीर, लिवर या प्लीहा के बढ़ जाने, पेट में कीड़े  
और बड़ी आंत के प्रदाह जैसे अवस्थाओं में हरिटाकी गुणकारी है।  
हरिटाकी भूख बढ़ाने और भोजन के पाचन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

### अरगवधा

पेट को साफ़ करने, कब्ज दूर करने, अपच, पेट की बीमारियों, बुखार में यह लाभकारी है।

### शुद्ध टंकल

यह एक उत्तम स्तम्भक (बाँधने वाला) और  
रोगानुरोधक (एंटीसेप्टिक) है।

अत्यधिक शारीरिक वजन कम करने के लिए इसका नियमित  
रूप से उपयोग करें पुरानी कब्ज, एसिडिटी, मूंह के छाले,  
अजीर्ण, खट्टी डकारें, गैस, आँखों में जलन दूर करने के लिए  
अतिलाभकारी है। नियमित सेवन से आंतें मजबूत होती हैं और  
सुबह से शाम तक चुस्ती फुर्ती बनी रहती है



पैक:  
100gm

### Each 10gm Contains:

Swarn Patri leaf ( Cassia Alongata)	4.6gm
Combi of P. Nigrum,P.Longum,Zin. Officinal	1.2gm
Black Salt (Rock Salt)	0.6gm
Sendhav Lavan(Rock Salt)	0.6gm
Trivart(Root) Operculina – Turpetham	0.6gm
Yavani(Fruit) Prachyspermum Ammi	0.6gm
Laghu Haritaki (Pericarp) Terminaliachebula	0.6gm
Argavdha (Fruit Pulp) Cassia fistula	0.6gm
Shuddh Tankan (Sodi Biboras)	0.6gm

उपयोग विधि: एक चाय का चम्मच (3-6gm) गुनगुने पानी के  
साथरात में सोने से पहले या चिकित्सक के परामर्शानुसार

# हींग वटी

श्वादिष्ट, पाचक, गैसहर



✓**हींग**— भूख को बढ़ाती है, कफ और वात को खत्म करती है, श्वास की बीमारी और खांसी से राहत दिलाती है। पेट में गैस का बनना व ऊपर चढ़ना बंद हो जाता है। पेट सम्बन्धी बीमारियों में बहुत लाभकारी है। कफ और वात को ठीक करती है। हींग, पेट में गैस होने, सूजन में, विरेचक औषधि के रूप में भी कारगर होती है। हींग, अपच, उदरशूल, अजीर्ण में बहुत लाभकारी है।

✓**शौंठ**— पेट की समस्याओं, मतली, दस्त, रक्तस्राव और गठिया के उपचार के लिए एक औषधि के रूप में बताया गया है। एक शक्तिशाली पाचक के रूप में यह पाचक अग्नि को भड़काता है और भूख बढ़ाता है। पेट— सम्बन्धी शिकायतों को और पेट साफ रखने में फायदेमंद है।

✓**सफेद जीरा**— पेट से जुड़ी कई तरह की बीमारियों को दूर करने के लिए यह एक कारगर औषधि है। जीरे में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फाइबर, मिनरल, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, विटामिन.ए और सी, क्यूमिक एल्डीहाइड आदि तत्व पाये जाते हैं। यह पेट के विकारों को दूर करने में बहुत ही उपयोगी है।

✓**पीपल**— पेट की किसी भी तरह की समस्या जैसे कब्ज, गैस और पेट दर्द आदि को दूर करता है। पीपल के पत्ते वात और पित्त को खत्म करते हैं।

✓**काली मिर्च**— काली मिर्च पाचन प्रक्रिया को बढ़ाने में मदद करता है, जिससे पेट में हाइड्रोक्लोरिक एसिड का स्राव बढ़ जाता है। पाचन में सुधार होने से पेट का दर्द, सूजन, अपच, पेट फूलना, कब्ज और पेट में गैस जैसे समस्याओं से राहत मिलती है। काली मिर्च पाचनशक्ति बढ़ाने के साथ-साथ भूख बढ़ाने में भी मदद करता है। काली मिर्च पेट में गैस नहीं बनने देता है।

✓**आमलाकी**— भूख बढ़ाने, कब्ज दूर करने और खट्टी डकारें आने जैसी समस्याओं से निजात दिलाने में सहायक है। पेट साफ रखने के लिए यह अत्यंत उत्तम औषधि है। इसमें विटामिन C जैसे अनेकों तत्व भी हैं।

✓**अमरा**— वातनाशक, भारी, गर्म, रुचिकारक और दस्तावर है। यह अपच को दूर करता है। पेट के रोगों, डायरिया, पेचिश में फायदा पहुंचाता है।

✓**काला नमक**— आयुर्वेदिक औषधि के रूप में इसका उपयोग अपच, कब्ज, तने हुए पेट, गैस, गैस न निकलने की शिकायत और हृदयदाह(heartburn) में अत्यंत उपयोगी है।

✓**पुदीना**— पुदीना विटामिन.सी का भी अच्छा स्रोत है। आयुर्वेद में पुदीने को वायुनाशक जड़ी.बूटी के रूप में देखा जाता है, जिसके उपयोग से सीने में जलन, मितली, पेट दर्द और आंतों की ऐंठन से आराम मिलता है। इसके सेवन से पाचन क्रिया दुरुस्त रहती है। अजीर्ण और पेट दर्द में भी अत्यंत उपयोगी है। पुदीना शरीर से टॉक्सिन और फ्री रैडिकल को नष्ट करने में भी मदद करता है।

प्रत्येक 100ग्राम में है:

Hingu ( Oleo Gum Resin)	Ferula foetida Rega	1.0
Sunthi (Rz)	Zingiber officinate Roxb.	2.2
Svetajiraka (Ft.)	Cuminum cyminum Linn -	4.4
Pippali (Ft.)	Piper longum Linn	6.2
Marica (Ft.)	Piper nigrum Linn	1.3
Amalaki (Ft.0 )	Embika officinalis Gaertn	7.0
Amra (Ft.)	Magnifera indica Linn	7.0
Samudra Lavan	Sea salt	25.0
Kala namak	Unaqua sodium chloride	17.8
Nrisar (salt)	Ammonium chloride	8.0
Pudina	Mentha viridis Linn	2.2
Nimbu (Ft.Ext)	Citrus limon	4.8
Katuveera	capsicum annum	1.3
Sarkara pills base	Saccharum officinarum	Q.S.

पैक:

50ग्राम

खुराक : 2-4 ग्राम इच्छानुसार



## हींग अनार

- **दाड़िमा-** यह एक प्रभावी क्षुधाबर्धक और पाचक है। साथ ही दस्त-निवारक और स्नायु को स्वस्थ रखता है। मुंह, गले की बीमारियों को दूर करने में सहायक है। रक्त को शुद्ध करता है।
- **हींग-** भूख को बढ़ाती है, कफ और वात को खत्म करती है, सांस की बीमारी और खांसी का नाश करती है। पेट में गैस का बनना व ऊपर चढ़ना बंद हो जाता है। पेट सम्बन्धी बीमारियों में बहुत लाभकारी है। हींग कफ और वात को ठीक करती है। हींग पेट में गैस होने पर, सूजन पर, विरेचक औषधि के रूप में भी कारगर होती है। हींग अपच, उदरशूल, अजीर्ण में बहुत लाभकारी है।
- **काली मिर्च-** इसका इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवा में भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसमें मैंगनीज, जस्ता, क्रोमियम, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, फाइबर, विटामिन ए, विटामिन सी और कई अन्य पोषक तत्व होते हैं। पाचन में सुधार होने से पेट का दर्द, सूजन, अपच, पेट फूलना, कब्ज और पेट में गैस जैसी समस्याओं से राहत मिलती है।
- **बड़ी इलायची-** सिर दर्द, थकावट से राहत दिलाती है। बड़ी इलायची का सेवन करने से पाचन शक्ति ठीक रहती हैं और पेट की समस्याओं से राहत मिलती हैं। आयुर्वेदिक मतानुसार इलायची शीतल, तीक्ष्ण, मुख को शुद्ध करने वाली, पित्तजनक तथा वात, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय, वस्तिरोग, सुजाक, पथरी, खुजली, मूत्रकृच्छ तथा हृदयरोग में लाभदायक है।
- **पौपल-** पेट की किसी भी तरह की समस्या जैसे कब्ज, गैस और पेट दर्द आदि को दूर करता है।
- **सौंठ-** पेट की समस्याओं, मतली, दस्त, रक्तस्राव और गठिया के उपचार के लिए एक औषधि के रूप में इसका प्रयोग होता है। एक शक्तिशाली पाचक के रूप में यह पाचक अग्नि को भड़काता है और भूख बढ़ाती है। पेट की परेशानियों को ठीक करता है और पेट की सफाई में फायदेमंद है।
- **सफेद जीरा-** पेट से जुड़ी कई तरह की बीमारियों को दूर करने के लिए ये एक कारगर औषधि है। प्रोटीन, फाइबर, मिनरल, कैल्शियम एफास्पोरस आयरन, विटामिन.ए और सी, क्यूमिक एल्डीहाइड आदि तत्व पाये जाते हैं। भोजन में अरुचि, पेट फूलना, अपच, एसिडिटी आदि को दूर करने में जीरा एक उपयोगी औषधि की तरह इस्तेमाल किया जाता है। जीरा पेट के कीड़े खत्म करने व बुखार उतारने में भी सहायक है।
- **आमलाकी-** भूख बढ़ाने, कब्ज दूर करने और खट्टी डकारें आने जैसी समस्याओं से निजात दिलाने में सहायक है। पेट साफ रखने के लिए यह अत्यंत उत्तम औषधि है। इसमें विटामिन सी जैसे अनेकों तत्व भी हैं।
- **काला नमक-** अपच, कब्ज, तने हुए पेट, गैस, गैस न निकलने की शिकायत और हृदयदाह (heartburn) में अत्यंत उपयोगी है।
- **आमरा-** वातनाशक, भारी, गर्म, रुचिकारक और दस्तावर है। यह अपच को दूर करता है। पेट के रोगों, डायरिया, पेचिश में फायदा पहुंचाता है।
- **सौंफ-** यह वात और कफ को दूर करती है। सौंफ हर उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद होती है। सौंफ में कैल्शियम, सोडियम, आयरन, पोटेशियम जैसे तत्व पाए जाते हैं। गैस व कब्ज दूर करने में सहायता करती है। पेट के कई विकारों जैसे मरोड़, दर्द और गैस्ट्रो विकार के लिए अत्यंत लाभदायक है।
- **धनियाँ-** धनिया विशेष रूप से वित को नियंत्रित करता है। भूख बढ़ाने के लिए और पाचन में सुधार करने के लिए अत्यंत उपयोगी है। धनिया विटामिन ए का भंडार होता है। यह अम्लरोधी है। धनिया, वीर्य के लिए हितकारी, मूत्र उत्पन्न करने वाला, मल को रोकने वाला, पाक में मधुर और तीनों दोषों को मिटाने वाला है। यह प्यास, उल्टी, श्वास, खांसी, दुर्बलता एवं पेट के कृमि को मिटाता है।



### प्रत्येक 100ग्राम में:

Dadima (Fruit) - Punica granatum Linn	2.00
Hingu (Auto gum resin)- Ferula foetida regel-	0.20
Marica (Ft.) Piper nigrum Linn	0.20
Sthulaila (Ft.) -Amomum subulatum roxb	0.15
Pippali (Ft.) - Piper longum Linn	0.40
Sunthi (Rz.) - Zingiber officinate Roxb	0.20
Svetajiraka (Ft.) -Cuminum cyminum Linn	2.30
Amalaki (Ft.0) - Embika officinalis Gaertn -	1.00
Amra (Ft.) - Magnifera indica Linn	4.25
Misreya (Frt.) - Foeniculum vulgare Mill	0.40
Dhanyaka (Frt) - Coriandrum sativum Linn	0.40
Kala namak - Unaqua sodium chloride	2.30
Nimbu ( Fr. Ext)- Citrus limon	1.00
Sarkara Pills Base -Saccharum officinarum	Q.S.

स्वराक : दिन में 2-4 बारया इच्छानुसार

पैक: 100gm



# तुलसामृत झाँस

PANCH TULSI  
DROPS



## जड़ी बूटियों की रानी

तुलसी विश्व प्रसिद्ध औषधि है और उच्चतम कोटि का रसायन है। पुराने समय से लेकर आजतक तुलसी के इस्तेमान की खास वजह भी इसके औषधीय गुण ही है।

आयुर्वेद में तो तुलसी को उसके औषधीय गुणों के कारण विशेष महत्व दिया गया है। तुलसी ऐसी औषधि है, जो ज्यादातर बीमारियों में काम आती है। इसमें मौजूद एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-कैंसर तत्व तनाव को भी दूर रखते हैं और पाचन क्रिया भी सही रखते हैं। तुलसी में अनेक जैव सक्रिय रसायन पाए जाते हैं। प्राचीन समय से इसका उपयोग अलग-अलग बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। तुलसी के सेवन से शरीर को कई प्रकार के एंटीआक्सीडेंट व पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।



पैक:  
20ml

तुलसामृत के प्रत्येक 10ml में  
निम्नलिखित अवयवों का extract

श्याम तुलसी	➤	2.0ml
विष्णु तुलसी	➤	2.0ml
राम तुलसी	➤	2.0ml
नीबू तुलसी	➤	2.0ml
वन तुलसी	➤	1.5ml
Excipients Tulsi	➤	0.5ml

के साथ मुलेठी और लौंग के सार

## तुलसामृत के उपयोग से लाभ

- 1-पेट संबंधी शिकायतें दूर होती हैं, थकान दूर होती है, सहनशीलता बढ़ती है और शरीर को कई प्रकार के एंटीआक्सीडेंट व पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स की भरपूर मात्रा पाई जाती है।
- 2-मधुमेह के रोगियों के शरीर में ब्लड ग्लूकोज का स्तर कम करने के लिए तुलसी काफी फायदेमंद होती है।
- 3-तुलसी में मौजूद विटामिन C और दूसरे एंटीआक्सीडेंट हृदय संबंधी रोगों से बचाते हैं।
- 4-इसके प्रयोग से रक्तचाप (Blood Pressure) व रक्तवसा (Cholesterol) को नियंत्रित रखा जा सकता है।
- 5-रक्त में हीमोग्लोबिन बढ़ाने में अत्यंत सहायक है।
- 6-स्मरण-शक्ति तेज करती है।
- 7-ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, इन्फ्लुएंजा, खासी और ठंड जैसी बीमारियों से बचाव करती है। तुलसामृत की 2 बूंदें थोड़े अदरक के रस या शहद के साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से दमा और खासी में बहुत लाभ मिलता है।
- 8-दांत के दर्द में, मसूड़ों से रक्त रिसने, दांत में कीड़ा लगने जैसी अवस्था में तुलसामृतकी 4-5 बूंदें रूई पर लगाकर मसूड़े और दांत पर रखने से आराम मिलता है।
- 9-गर्म जल में तुलसामृत की 4-5 बूंदें डाल कर गार्गल करने से गले या मुंह में छाले या दर्द, आवाज बैठ जाने की अवस्था में आराम मिलता है।

सेवन विधि: 1-1 बूंदें तुलसामृत की एक ग्लास जल या चाय में मिलाकर प्रतिदिन 4-5 बार लें या चिकित्सक के परामर्शानुसार



# ओलीवो

## टैबलेट

### ओलीवो

पंद्रह जांची-परखी प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का शक्तिशाली सम्मिश्रण है जो शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है और वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या और उनकी गति को बढ़ाता है जिससे गर्भधारण की सम्भावना में वृद्धि होती है ।

- ▶ **केसर** – इसमें स्नायु-तंत्र को मजबूत बनाने की अदभुत क्षमता है जिससे यह अवसाद और तनाव को कम करने में सहायक है ।
- ▶ **शुद्ध शिलाजीत** – यह ह्युमिक पदार्थों से भरपूर होता है। इसका उपयोग अच्छे सेक्सुअल स्वास्थ्य के लिए होता है ।
- ▶ **सफेद मूसली** – इसे प्राकृतिक वियाग्रा कहा जाता है जो शिश्न को उत्थित करता है और शीघ्रपतन को रोकने में सहायक है ।
- ▶ **सतावर** – इसमें विटामिन-C पाया जाता है जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता, सेक्स हॉर्मोन, शुक्राणु संख्या और प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है ।
- ▶ **अश्वगंधा** – इसको भारतीय जिन्सेंग भी कहा जाता है। इसमें पाए जाने वाले विथैनोलायड्स, एंटीऑक्सीडेंट का कार्य करते हैं। यह मानसिक अवसाद और घबराहट को कम करता है और वीर्य को गाढ़ा करता है ।
- ▶ **स्वर्ण वंग** – इसका उपयोग मूत्र और वीर्य सम्बन्धी समस्या को दूर करने में किया जाता है। स्तम्भन में कमी से पीड़ित पुराने से पुराने रोगियों को भी लाभ पहुँचाता है ।
- ▶ **कौंच बीज** – इससे शरीर में बनने वाले प्रोलैक्टिन नामक हॉर्मोन को रोकने में सहायता मिलती है। प्रोलैक्टिन में पुरुषांग के उत्थान को रोकने का गुण होता है ।
- ▶ **आंवला** – एक अदभुत फल है, जिसमें प्रकृति में पाया जाने वाला सबसे अच्छा और ज्यादा विटामिन-C पाया जाता है ।
- ▶ **सूरजमुखी का बीज** – इसमें फाईटोस्टेराल नामक तत्व पाया जाता है जो शरीर से कोलेस्ट्रॉल को कम करते हैं। विटामिन-E शुक्राणुओं के DNA में आई किसी भी कमी को दूर करके उनकी क्षमता को बढ़ाता है और प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है ।
- ▶ **विदारमूल** – प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है, मस्तिष्क की कोशिकाओं को पोषित करता है और याददाश्त बढ़ाता है ।
- ▶ **ताल मखाना** – पूरे शरीर को और विशेष रूप से जननांगों को पोषक तत्व प्रदान करके शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाता है ।
- ▶ **सालम पंजा** – यह प्रजनन तंत्र से सम्बंधित सभी अंगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है । नसों को स्वस्थ रखता है ।
- ▶ **सालम मिश्री** – बीमारी के बाद शरीर की शक्ति को वापस लौटने में अत्यंत लाभदायक है और नसों को स्वस्थ रखता है ।
- ▶ **विदारबीज** – शीघ्रपतन को रोकने में सहायक है ।
- ▶ **कीकर गोंद** – यह मूत्रजननांगी स्राव को नियंत्रित करता है और मूत्र-मार्ग और प्रजनन-तंत्र की बीमारियों को दूर करने में सहायक है ।

### प्रत्येक टैबलेट्स में है:

केसर (A.F.I.)	3mg
सफेद मूसली	10mg
अश्वगंधा	40mg
आंवला	40mg
ताल मखाना	20mg
विदारमूल	3mg
सालम पंजा	15mg
सालम पंजा	15mg
शुद्ध शिलाजीत	25mg
कीकर गोंद	3mg
कौंच बीज	100mg
सूरजमुखी का बीज	20mg
सतावर	20mg
सालम मिश्री	15mg
सालम मिश्री	15mg
विदारबीज	15mg
स्वर्ण वंग	20mg



पैक:

10X1X10 टैबलेट्स

**खुराक:** 1 या 2 टैबलेट रोजाना 2 बार  
चिकित्सक के परामर्शानुसार

# वीटोमैक्स



वीटोमैक्स एक अद्वितीय कामोत्तेजक औषधि है। इसके इस्तेमाल से शक्ति, स्फूर्ति और प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है एवं संतानोत्पत्ति की संभावना बढ़ जाती है। वीटोमैक्स में पायी जाने वाले औषधीय तत्वों का लाभ निम्नलिखित है।



प्रत्येक साफ्ट जिलेटिन कैप्सूल में है घृत 500mg जिसमें है:

अश्वगंधा ( Withania somnifera)	117.65mg
सफेद मुसली ( Chlorophytum borivillanum)	39.20mg
शतावरी ( Asparagus racemosa)	39.20mg
कौंच बीज ( Mucuna pruriens)	117.65mg
विदारी कंद (Ipomea digitala)	39.20mg
कोकिलाक्ष ( Hygrophilla spinosa)	39.20mg
जातिफल ( Myristica fragrans)	9.80mg
माशा ( Phaseolus mungo )	39.20mg
शुद्ध शिलाजीत ( Asphaltum)	39.20mg
अकरकरा ( Anacyclus pyrethrum)	19.60mg

गाय के 500mg दूध और गौ-घृत 500mg में सिद्ध घृत विधि से तैयार।

- **शुद्ध शिलाजीत** – यह मानवता को प्रकृति का एक अनुपम उपहार है और यह ह्यूमिक तत्वों से भरपूर है। इसमें विशेष रूप से फुल्विक एसिड पाया जाता है जो शरीर की स्फूर्ति, ऊर्जा और कामेच्छा को बढ़ाता है।
- **विदारी कंद** – इसके उपयोग से मोटापा कम होता है और लीवर एवं प्लीहा स्वस्थ होते हैं। यह शरीर में वसा के जमाव को कम करता है।
- **कोकिलाक्ष** – इस पौधे में अल्कलॉयड्स, फ्लेवोनॉयड्स एवं टरपेनॉयड्स पाए जाते हैं। ये तीनों ही शुक्राणु उत्पादन को बढ़ाते हैं। इस पौधे के उपयोग से कई दूसरी बीमारियाँ भी ठीक होती हैं जैसे गोनोरिया, सूजन, कैंसर, अति-स्राव, पथरी इत्यादि।
- **जायफल (जटीफल)** – इस पौधे में एंटी-ओक्सीडेंट्स होते हैं जो शरीर से हानिकारक मुक्त कणों को बाहर निकालने में सहायक होते हैं।
- **सफेद मूसली** – इसे प्राकृतिक वायग्रा कहा जाता है जो उत्थान को बढ़ाने और शीघ्रपतन को रोकने में सहायक है।
- **शतावर** – इसमें विटामिन-C पाया जाता है जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता, सेक्स हॉर्मोन, शुक्राणु संख्या और प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है।
- **अश्वगंधा** – इसको भारतीय जिन्सेंग भी कहा जाता है। इसमें पाए जाने वाले विथैनोलायड्स एंटीऑक्सीडेंट का कार्य करते हैं। यह मानसिक अवसाद और घबराहट को कम करता है।
- **कौंच बीज** – इससे शरीर में बनने वाले प्रोलैक्टिन नामक हॉर्मोन को रोकने में सहायता मिलती है।
- **अकरकरा** – इसमें प्रजनन क्षमता और कामोत्तेजना को बढ़ाने वाले एल्काईलामाइड्स पाए जाते हैं। आधुनिक अध्ययनों से यह सिद्ध हो चुका है कि अकरकरा एक ब्रेन टॉनिक है और इसमें कामलिप्सा बढ़ाने वाले तत्व पाए हैं।
- **माशा** – इसका उपयोग शरीर की कई व्याधियों को दूर करने में किया जाता है। इसका मुख्य उपयोग एक टॉनिक के रूप में होता है। यह लीवर को मजबूत करता है। गठिया दूर करता है, स्नायु-तंत्र को शक्ति प्रदान करता है,

**पैक :**

30 साफ्ट कैप्सूल्स

**उपयोग विधि:** सुबह खाली पेट, दो कैप्सूल हलके गुनगुने पानी या दूध के साथ अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार



## रति पावर

### पुरुष और स्त्री दोनों के लिए शुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए

आधुनिक जीवन शैली का जबर्दस्त असर स्त्री पुरुष की कामलिप्सा के ऊपर पड़ता है। चारों ओर लोग अपने काम, रोजगार, नौकरी में अत्यधिक व्यस्त रहने लगें हैं और अधिक धन कमाने को लेकर हर समय चिंतित रहते हैं। उनकी मनोदशा रति-क्रिया के प्रति नकारात्मक होने लगती है, रतिक्रिया में कम दिलचस्पी की इस प्रवृत्ति के लिए लोगों का आधुनिक टैकनोलोजी के प्रति झुकाव भी एक महत्वपूर्ण कारण है। मोबाइल, स्मार्ट फोन, टेबलेट का शयन-कक्ष में भी उपयोग, लैपटॉप, टिवटर, फेस बुक आदि का अधिकाधिक इस्तेमाल, पारिवारिक समस्याएँ और तनाव, शराब, सिगरेट, ड्रग्स, जंक फूड का अत्यधिक सेवन, मोटापा और शारीरिक गतिविधियों में कमी आदि के कारण भी यौनेच्छा में कमी चिंता का विषय है। सामान्यतः स्वस्थ शरीर और सुंदर स्वास्थ्य ही रमनीय यौन गतिविधि और रतिक्रिया में सुखानुभूति की आधारशिला है।

- **सलाब मिसरी**— शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाने और उनकी गुणवत्ता बढ़ाने के लिए यह एक प्रसिद्ध शक्तिशाली आयुर्वेदिक अनुपूरक है। शरीर को सबल, सक्रिय और ऊर्जावान रखने के अतिरिक्त, रतिक्रिया की अवधि बढ़ाने में भी सहायता करता है।
- **कौंच बीज**— आयुर्वेद में 'कपिकाचू' के नाम से जाना जाने वाला यह एक जाना-माना हर्ब है, जो शरीर के स्नायु-तन्त्र को शक्ति प्रदान करता है। टेस्टोस्टेरोन के उचित स्तर को बनाये रखता है, पुरुष-शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ, कामेच्छा को भी बढ़ाता है। यौनांग को दृढ़, कठोर और मजबूत बनाने के साथ ही रति क्रिया की अवधि बढ़ाने में भी उपयोगी है क्योंकि यह पुरुष-यौनांग की संवेदनशीलता को कम करता है। अच्छी नींद लाने में सहायक है।
- **अश्वगंधा**— यह शारीरिक शक्ति और यौन-शक्ति बढ़ाने वाला, कामोत्तेजक आयुर्वेदिक हर्ब है। इसमें मौजूद एंटीआक्सीडेंट्स तन की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में लाभदायक है। स्त्रीयों के लिए भी यह एक अत्यंत उपयोगी है। शारीरिक ऊर्जा बढ़ाने, कामेच्छा बढ़ाने, रतिक्रिया से संतुष्ट रहने, त्वचा की झुर्रियाँ कम करने, रजोनिवृत्ति की अवस्था में हॉर्मोस का संतुलन बनाये रखने, स्त्रीयों में अस्वस्थता, मानसिक तनाव, हॉर्मोस में असंतुलन, कुपोषण आदि उनकी प्रजनन स्वास्थ्य और गर्भ धारण करने की क्षमता कम कर देते हैं। अध्ययन इंगित करते हैं कि अश्वगंधा थायरोइड की क्रिया-कलाप को संबल देता है और हॉर्मोस को संतुलित रखने में सहायक है।
- **खस-खस**— स्नायु-तन्त्र को शक्ति प्रदान करता है। कामेच्छा बढ़ता है।
- **पिप्पली**— यह गैस को दूर करने वाली, और पाचन बढ़ाने वाली है। पिप्पली गर्भरोधक, शक्तिदायक, और मासिक धर्म को नियमित रखती है।
- **तुलसी**— तुलसी में तनाव रोधी गुण पाए जाते हैं। इसके औषधीय गुणों के कारण आयुर्वेद में इसे बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।
- **नक्स वोमिका**— नक्स वोमिका पुरुष के वन्ध्यत्व ( इन्फर्टिलिटी) सम्बंधित समस्याओं जैसे नपुंसत्व और शीघ्र-स्खलन को दूर करने में सहायक है। इसके सेवन से भूख बढ़ती है। अवसाद दूर करने, माइग्रेन, सर-दर्द और रजोनिवृत्ति के लक्षणों में भी इसका उपयोग किया जाता है।
- **शुद्ध शिलाजीत**— धातु क्षीणता, बहुमूत्र, स्वप्नदोष, सब प्रकार के प्रमेह, यौन दौर्बल्य यानी नपुंसकता, शरीर की निर्बलता, वृद्धावस्था की निर्बलता आदि व्याधियों को दूर करने के लिए शिलाजीत उत्तम गुणकारी सिद्ध होती है। नपुंसकता से पीड़ित विवाहित या अविवाहित व्यक्ति को भी इसके सेवन से फायदा हो सकता है। शिलाजीत बलपुष्टिकारक, ओजवर्धक और दौर्बल्यनाशक है।



### रतिपावर के प्रत्येक कैप्सूल में है :

सलाब मिसरी(Eulophia Campestris)	35mg
कौंच बीज(Mucuna Pruriens)	50mg
अश्वगंधा (Withania somnifera)	150mg
खस-खस(Andropogon muricatus)	65mg
पिप्पली (Piper longum)	50mg
तुलसी (Ocimum sanctum)	50mg
नक्स वोमिका (Strychnos nuxvomica)	50mg
शुद्ध शिलाजीत	50mg

पैक:

5x1x10 कैप्सूल

खुराक- 1-2 कैप्सुल्स दिन में 2 बार या चिकित्सक के परामर्शनासार.

# कोलोस्ट्रम



## फिटनेस और स्वास्थ्य

कोलोस्ट्रम एक दुग्ध-पदार्थ है जो मानव, गाय और दूसरे स्तनधारी जीवों से मिलता है। यह शिशु के पैदा होने के तुरंत बाद माता के दूध में प्रारम्भ के कुछ दिनों तक पाया जाता है। यह साधारण दूध से गाढ़ा और हल्के पीले रंग का होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इसमें एंटीबॉडीज साधारण दूध के मुकाबले 100 गुना ज्यादा होती है। इससे शिशुओं में रोग-प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है। यह एक प्रकार से प्रकृति द्वारा दिया गया उपहार है। कोलोस्ट्रम से मिले एंटीबॉडीज शरीर में पूरी उम्र विद्यमान रहते हैं। रोग-प्रतिरोधक क्षमता के अलावा इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन, खनिज तत्व, वसा, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट्स पाए जाते हैं। अतः यह एक उत्तम स्वास्थ्यवर्धक भोज्य पदार्थ है।



**पैक:**  
60 कैप्सूल्स

## कोलोस्ट्रम के लाभ

- ◆ एलर्जी से बचाव करता है।
- ◆ याददाश्त बढ़ाने में सहायक है।
- ◆ इसमें ग्लूटाथियोन पाया जाता है जो शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है।
- ◆ लीवर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करता है और मांसपेशियों को सुदृढ़ करता है।
- ◆ शक्ति और उर्जा बढ़ाता है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है।
- ◆ हड्डियों के घनत्व को बढ़ाता है।
- ◆ ट्यूमर को रोकने में सहायक है।
- ◆ नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है।
- ◆ पीलिया के रोगियों के लिए काफी लाभदायक है।
- ◆ एच पाईलौरी नामक बैक्टीरिया को नष्ट करता है और अल्सर ठीक करने में सहायक है।

## कैसे कार्य करता है?

दरअसल, गाय के दूध में एंटीबॉडी यानी रोग प्रतिरक्षी होते हैं जो शरीर के इम्यून सिस्टम या प्रतिरक्षी तंत्र को स्वस्थ रखने और उसे मजबूत बनाने का काम करते हैं। जब एचआईवी वायरस शरीर पर हमला करता है तो वह प्रतिरक्षी तंत्र को कमजोर करने लगता है। गाय के दूध में मौजूद एंटीबॉडी इस से लड़ सकते हैं। एंटीबॉडी एक तरह का प्रोटीन होता है जो बीमारियों से लड़ने का काम करता है। कोलोस्ट्रम उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी करता है और कोशिका प्रजनन के अनुकूलन में मदद करता है। कोलोस्ट्रम सामान्य त्वचा के विकास और सेलुलर ऊतकों की मरम्मत करने के साथ-साथ त्वचा को स्वस्थ और सुन्दर रखने में सहायक है।

**High quality of colostrum  
contains minimum  
of 16% immunoglobulins**

COLOSTRUM	Amount per serving
Standardized to 24% immunoglobins	350 mg

**खुराक** 1 या 2 कैप्सूल्स दिन में एक बार



# बायो-डिटॉक्स

## फुट पैच

### स्वस्थ और नीरोगी जीवन के लिए

यह अनुमान लगाया जाता है कि प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले विषाक्त तत्वों के अलावा रसायनों और मनुष्य द्वारा निर्मित लगभग 400 विषाक्त तत्व हमारे शरीर में रोज प्रविष्ट होते हैं। अगर समय-समय पर इन विषाक्त तत्वों को शरीर से न निकाला जाये तो ये कई गंभीर बीमारियों को उत्पन्न कर सकते हैं। यदि हम शरीर को अच्छी तरह से विषाक्त तत्वों से मुक्त कर लें तो शरीर के विभिन्न अंगों पर हुए दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है और हमारा शरीर अपने पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है।

यह विषाक्त तत्व जब शरीर में जमा हो जाते हैं तो यह शरीर को सुस्त और कमजोर बना देते हैं लेकिन लम्बे समय में हमारा शरीर इनका आदि हो चुका होता है और हमें महसूस भी नहीं होता। ये विषाक्त तत्व गुरुत्वाकर्षण के कारण शरीर के सभी अंगों से आकर हमारे पैरों में एकत्रित हो जाते हैं। बायो-डिटॉक्स फुट पैच एक अत्यंत आधुनिक और वैज्ञानिक तरीका है जिससे शरीर के विषाक्त तत्वों को बाहर निकाल कर शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ बनाया जा सकता है। यह उपाय हमारे शरीर की प्रतिरक्षा-प्रणाली को मजबूत करता है, मानसिक क्षमता और शारीरिक उर्जा को बढ़ाता है। यह उसी पद्धति पर काम करता है जिस पर एक्युपंचर काम करती है। पैरों में लगभग 60 एक्युपंचर बिंदु होते हैं और जब रक्त पैरों के पास से गुजरता है तब बायो-डिटॉक्स फुट पैच इन बिन्दुओं से विषाक्त तत्वों को सोख लेता है। इस तकनीक को विकसित करने में जापानी वैज्ञानिकों को लगभग 24 वर्ष लगे। बायो-डिटॉक्स फुट पैच शरीर से भारी धातुओं, विषाक्त तत्वों और सूक्ष्म परजीवियों को बाहर निकाल कर शरीर की नैसर्गिक ऊर्जा और स्वास्थ्य को पुनः स्थापित करता है।



### उपयोग विधि

1. सोने से पहले पैरों को धोकर सुखा लें।
2. बायो-डिटॉक्स के दो नए फुटपैच निकालें।
3. बायो-डिटॉक्स का अडेसिव टेप निकालें।
4. अडेसिव का सेलोफिन कवर हटा दें।
5. फुट पैच को पन्नी से निकाल कर उसकी लोगो वाली सतह अडेसिव टेप पर चिपकायें।
6. फुटपैच की औषधि-युक्त सतह (सफेद रंग की) को अडेसिव टेप सहित तलवे पर चिपका लें।
7. यही प्रक्रिया दूसरे पैर के तलवे पर करें।
8. दोनों पैरों के तलवों में फुटपैच को पट्टियों से बाँध कर रात भर छोड़ दें।
9. अगले दिन सुबह इन फुटपैच को निकाल कर फेंक दें।

### बायो-डिटॉक्स फुट पैच के फायदे

- यह शरीर के एक्युपेशर बिन्दुओं को उत्तेजित करता है।
- यह रक्त-संचरण को सुधारता है और यौवन और स्फूर्ति को लौटाता है।
- मानसिक अवसाद और तनाव को कम करता है और अनिद्रा को दूर करता है। पाचन-क्रिया को मजबूत करता है।
- त्वचा की कांति को लौटाता है और जोड़ों की जकड़न और दर्द को कम करता है।
- गैस की समस्या से छुटकारा दिलाता है।
- शरीर की प्रतिरक्षा-प्रणाली को मजबूत करता है जिससे हम निरोग रहते हैं।

### बायो-डिटॉक्स फुट पैच के मुख्य संयोजक

डेक्सट्रीन, यूकेलिप्टस, वुडविनेगर, मेन्थाल, टर्मालीन, सिलिका डाईमेथिकोन सिलियेट (यह सारे संयोजक प्राकृतिक पदार्थ हैं और शरीर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करने में एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं)

पैच: 6 फुट पैड्स

# वर्जिन अगेन



उम्र बढ़ने और समय बीतने के साथ-साथ स्त्रीयों के अन्तरंग क्षणों में यौन-क्रिया कलापों में कम होती दिलचस्पी फिर से लौटाने के लिए, तरुणाई का फिर एहसास दिलाने के लिए कल का अद्वितीय उत्पाद आज ही है 'वर्जिन एगेन'।



पुरुष अपनी स्त्री को हर उम्र में आकर्षक और तरुण देखना पसंद करते हैं। अधिकांश पुरुष स्त्री के सन्निध्य के अन्तरंग क्षणों में संकुचित या टाइट योनि की चाह रखते हैं, परन्तु उम्र बढ़ने की प्रक्रिया, बारंबार यौन-क्रीड़ा, संपूर्ण स्वास्थ्य, प्रसव आदि के कारण योनि मार्ग ढीली और चौड़ी हो जाती है और स्त्री-पुरुष दोनों यौन-समागम के आनंद से वंचित रहते हैं किसी भी उम्र की स्त्री हो, वर्जिन एगेन के उपयोग से योनि मार्ग संकुचित या संकडी हो जाती है और अन्तरंग क्षणों के दौरान योनि की पकड़ प्रबल होकर रतिक्षण को कामोत्तेजक बना देती है और फिर वे जैसे अपने तरुणावस्था में लौट आने का एहसास करती हैं।

(प्रति १० मि. ली. में प्रयुक्त )

<b>Ficus bengalensis</b> ( बड़ )	<b>100 mg</b>
<b>Ficus religious linn.</b> ( पीपल )	<b>100 mg</b>
<b>Ficus Glomerata Roxb.</b> ( गूलर )	<b>100 mg</b>
<b>Querous infectoria</b> ( माजूफल )	<b>500 mg</b>
<b>Myristica Officinalis</b> ( जायफल )	<b>50 mg</b>
<b>Alum</b> ( सुभ्रा )	<b>50 mg</b>
<b>Glycerin</b> ( ग्लिसरीन )	<b>QS</b>
<b>White Rose Essence</b> ( वाइट रोज एसैन्स )	<b>QS</b>
<b>Sodium Benzoate</b> (सोडियम बेन्जोएट )	<b>6 mg</b>

## वर्जिन अगेन से लाभ

- योनि और उसके आस-पास की मॉस-पेशियाँ को संकुचित कर टाइट करती हैं।
- स्त्री की कामेच्छा बढ़ाती है।
- योनि में चिकनाई लाकर सूखापन दूर करती है।
- योनि के प्राकृतिक लचीलापन को फिर से बरकरार करने में सहायता करती है।
- रतिक्रिया के दौरान कामोत्तेजना की तीव्रता, आवृत्ति को बढ़ाती है
- रजोनिवृत्ति प्रक्रिया को धीमा करती है।

पैक:

1mlx10bottles

उपयोग विधि: संभोग क्रिया के 20-30 मिनट पहले 'वर्जिन एगेन' के 5-10 बूंदों को ऊंगली के सिरे पर लगाकर योनि के 3/4 योनि के अन्दरकी दीवारों पर समान रूप से लगाये।



## फेमोकेयर किट

लगभग 35 वर्ष की उम्र तक आते-आते स्त्रियों में ईस्ट्रोजेन हार्मोन के उत्पादन में कमी आने लगती है। इसकी कमी से स्त्रियों में कई प्रकार की समस्याएं (चिड़चिड़ापन, अवसाद, थकावट, कामेच्छा में कमी) होने लगती हैं। इस अवस्था में शरीर की सामान्य क्रियाओं को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि स्त्रियों को इस्ट्रोजेन हार्मोन की पूर्ति की जाए। बाज़ार में सिंथेटिक इस्ट्रोजेन्स उपलब्ध हैं जो फायदा तो पहुंचाते हैं लेकिन साथ ही कई साइड-इफेक्ट्स भी देते हैं। सिंथेटिक इस्ट्रोजेन के लगातार इस्तेमाल से कैंसर होने का भी खतरा बना रहता है। अतः यह आवश्यक है कि इस्ट्रोजेन की कमी को प्राकृतिक स्रोतों से पूरा किया जाए। पौधों से प्राप्त इस्ट्रोजेन को फाईटो इस्ट्रोजेन कहा जाता है।



### फेमोकेयर किट के उपयोग से होने वाले लाभ

- यह स्त्रियों के लिए सम्पूर्ण टॉनिक है
  - यह त्वचा के लावण्य और कांति को बनाये रखता है
  - यह स्त्रियों में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक है
  - स्त्रियों के स्तनों के आकार और सौन्दर्य को बढ़ाता है
  - पाचन-क्रिया को मजबूत बनाता है
  - यह गैस और एसिडिटी की समस्या को कम करता है
  - इसके सेवन से जोड़ों के दर्द से मुक्ति मिलती है
  - मासिक धर्म के दौरान रक्त-स्राव को सामान्य रखता है
  - गर्भाशय को स्वस्थ रखता है और प्रदर से मुक्त करता है
  - गर्भ धारण करने की संभावना को बढ़ाता है
  - महिलाओं में अज्ञात कारणों से होने वाले गर्भपात को रोकता है
- किशोर उम्र की और रजोनिवृत्ति की ओर अग्रसर महिलाओं के लिए विशेष लाभदायक है।

**सूचना:** 2 फेमोकेयर साफ्ट कैप्सूल्स सुबह में पानी या दूध के साथ, भोजन के पहले खाली पेट में। शतावरीकेयर और मेथीकेयर प्रत्येक के एक-एक कैप्सूल्स दिन में 2 बार भोजन के बाद या चिकित्सक के परामर्शानुसार

### प्रत्येक किट में :

फेमोकेयर जार-60कैप्सूल्स,  
शतावरीकेयर जार-60कैप्सूल्स,  
मेथीकेयर जार-60कैप्सूल्स

### प्रत्येक फेमोकेयर कैप्सूल में पाए जाने वाले अवयव

शतावरी (एस्पैरेजस रेसीमोसस)	: 38.45 mg
अशोक (सर्का इंडिका)	: 76.90 mg
कुमारी (एलो इंडिका)	: 38.45 mg
लोधरा (सिम्लोकस रेसीमोसस)	: 115.40 mg
यष्टिमधु (ग्लाइसेर्राहिज ग्लैब्रा)	: 38.45 mg
दशमूल (जेनेरिक)	: 76.90 mg
मुद्गपर्णी (फैसीओलस ट्राइलोबस)	: 38.45 mg
मशपर्णी (टेराम्नस लैबिआलिस)	: 38.45 mg

### प्रत्येक शतावरीकेयर कैप्सूल में पाए जाने वाले अवयव

शतावरी का सार (एस्पैरेजस रेसीमोसस)	:250 mg
शतावरी चूर्ण (एस्पैरेजस रेसीमोसस)	:100 mg

### प्रत्येक मेथीकेयर कैप्सूल में पाए जाने वाले अवयव

मेथी का सार (ट्राईगोनेला फीनम)	: 250 mg
मेथी चूर्ण (ट्राईगोनेला फीनम)	: 250 mg





# परिकल्प

## शिरप/कैप्सूल

स्त्रियों में मासिक-धर्म एक सामान्य प्रक्रिया है और यह इस बात का परिचायक है कि उसकी प्रजनन क्षमता बरकरार है। यह मासिक चक्र स्त्रियों के हार्मोन्स के साथ जुड़ा है। मासिक स्राव के दौरान स्त्रियों को दर्द, सुस्ती, इत्यादि की शिकायत रहती है और चिड़चिड़ापन रहता है। इस मासिक-स्राव का चक्र सामान्यतया 25 से 35 दिनों का होता है। सामान्यतया यह स्राव 3 से 7 दिनों तक चलता है।



### महिलाओं के सुन्दर शारीरिक विकास के साथ ही उनके मुश्किल दिनों का विश्वसनीय साथी

हार्मोन्स के असंतुलन, संक्रमण, इत्यादि कारणों से कई स्त्रियों में यह चक्र अनियमित हो जाता है। इसके अलावा कुछ स्त्रियों में रक्त-स्राव के दौरान काफी कष्ट होता है। इसके अलावा स्त्रियों में ल्युकोरिया की समस्या भी काफी पाई जाती है। इसे प्रदर के नाम से भी जाना जाता है। प्रदर दो प्रकार का होता है—श्वेत प्रदर एवं रक्त प्रदर। मासिक धर्म की अनियमितता और प्रदर दोनों ही स्त्रियों के लिए काफी कष्टदायी होते हैं। मासिक धर्म की अनियमितता एवं प्रदर का कोई संतोषजनक इलाज ऐलोपथिक पद्धति में नहीं है।

**परीकल्प** – बारह प्राकृतिक औषधियों का एक समुचित और जांचा-परखा फार्मूला है, जो स्त्रियों को इन कष्टपूर्ण दिनों में एक सच्चे साथी की तरह सहारा देता है। परीकल्प के समस्त संयोजक एक-दूसरे के पूरक और सहक्रियाशील हैं जो स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाते हैं, मासिक स्राव को सामान्य बनाते हैं, तनाव और अवसाद को दूर करते हैं और स्त्रियों को शक्ति और ऊर्जा देकर उन्हें अज्ञात कारणों से होने वाले बॉझपन से बचाते हैं। परिकल्प में लौह तत्व बढ़ाने वाली औषधी सम्मिश्रित है जिससे रक्त प्रदर से होने वाले लौह तत्व की कमी को दूर करने में सहायता मिलती है।

### परीकल्प के लाभ

- परीकल्प मासिक-धर्म को नियंत्रित करता है और रक्त-स्राव को सामान्य बनाता है।
- परीकल्प स्त्रियों में गर्भधारण की सम्भावना को बढ़ाता है।
- परीकल्प स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए पोषक तत्व प्रदान करता है।
- परीकल्प स्त्रियों की त्वचा के लावण्य को बनाये रखता है, उसकी कांति को बढ़ाता है।
- हर्बल तत्वों के कारण परिकल्प का प्रयोग लम्बी अवधि के लिए किया जा सकता है।
- परीकल्प का उपयोग अन्य दवाओं के साथ बिना किसी साइड-इफेक्ट के किया जा सकता है।
- परीकल्प योनि की अन्तः दीवारों के लचीलेपन और शक्ति को बढ़ाता है।

### पैक :

परिकल्प शिरप— 200ml  
परिकल्प कैप्सूल—60 कैप्सूल

उपयोग विधि शिरप – 10 ml दिन में 2 बार कैप्सूल –  
1 या 2 कैप्सूल दिन में 2 बार चिकित्सक के परामर्शानुसार

### परिकल्प शिरप की संरचना—हर 10 ml में

अशोक छाल (सर्राका इंडिका)	1000 mg
लोधरा (सिम्पलोकोस रेसीमोसा)	500 mg
बाला (सिडा कार्डिफोलिया)	75 mg
काली मूसली (कुर्कुलिगो ऑर्किआइड्स)	75 mg
शिवलिंगी (ब्राइओनिया लैसीनियोसा)	125 mg
असगंध (विथानिया सौमनीफेरा)	125 mg
गुडहल फूल (हिबिस्कस रोजासाईर्नेसिस)	75 mg
नागरमोथा (सिप्रस रोटंडस)	75 mg
सतावर (एसपैरेजस रेसीमोसा)	75 mg
पलाश पुष्प (बूटिया फ्रंडोसा)	125 mg
धावा फूल (वुडफोर्डिया फ्रुक्टीओसा)	125 mg
नागकेसर (मेसुआ फेरा)	75 mg
षुद्ध कसिस (फेरस सल्फेट)	20 mg



## स्लिम पावर

मोटापा एक समस्या है जो कई तरह की बीमारियों को आमंत्रित करती है। मोटापे की वजह से मधुमेह, हृदय रोग एवं कुछ प्रकार के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। गर्भावस्था के दौरान भी जरूरत से ज्यादा वजन बढ़ने से शिशु और माता के लिए कई प्रकार की दीर्घकालिक और अल्प-कालिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। स्लिम पावर वजन कम करने का प्राकृतिक उपाय है जिसमें प्रामाणित औषधियाँ मिली हुई हैं।

### अदरक का सार -

अदरक को वजन कम करने वाला भोज्य पदार्थ माना जाता है। अदरक रक्त-नलिकाओं को फेलाता है जिससे रक्त का संचरण तीव्र गति से होता है। इस कारण शरीर में ऊर्जा बढ़ती है और तापमान भी बढ़ जाता है।

### गुग्गल शुद्ध -

गुग्गल थायराइड हारमोंस के उत्पादन को बढ़ता है जिससे चयापचय की गति बढ़ती है। यह लिवर के क्रिया-कलापों को भी बढ़ाता है और L.D.L. कोलेस्ट्रॉल को घटाता है। गुग्गल के अन्दर दो प्रकार के सक्रिय गुग्गलस्टेरोन्स (गुग्गलस्टेरोन) पाए जाते हैं। शरीर में L.D.L. कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड के स्तर को कम करते हैं और साथ ही साथ H.D.L. कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बढ़ाते हैं।

### लहसुन -

लहसुन में एलिसीन नामक तत्व पाया जाता है जो सूक्ष्म जीवाणुओं को माराता है एवं वसा और कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक है। यह एचडीएल कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। लहसुन भूख को कम करने वाला भोज्य पदार्थ है क्योंकि यह मस्तिष्क की लेप्टीन के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाता है। लेप्टीन भूख को कम करने में सहायक है। लहसुन एडीनलीन नामक हर्मोन के स्राव को बढ़ाता है जो शरीर के चयापचय की गति को बढ़ा देता है। इस बड़े हुए चयापचय से अधिक कैलोरीज जलती है जिससे वजन कम होता है।

### पुष्कर मूल -

पुष्कर मूल में पाया जाने वाला एलेनोलेक्टोन इन्सुलिन की संवेदनशीलता को बढ़ाता है जिससे इन्सुलिन का स्राव कम होता है और शरीर वसा का संचय कम करता है। इसके कारण पुष्कर मूल कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड की मात्रा को घटाने और वजन कम करने में सहायक है।

### पहाड़ी इमली -

पहाड़ी इमली में हाइड्रोक्सीसिट्रिक एसिड पाया जाता है, जो वसा और कोलेस्ट्रॉल के उत्पादन और भंडारण को कम करता है। इसकी वजह से शरीर को जब भी अतिरिक्त ऊर्जा की जरूरत होती है वह शरीर में पहले से संचित वसा का उपयोग करता है। इससे जमी हुई वसा कम होती है और वजन घटता है। पहाड़ी इमली शरीर में सीरोटोनिन के स्तर को बढ़ाती है और वजन कम करने में सहायक है।

उपयोग विधि: रोजाना 2 कैप्सूल्स नाश्ता और रात्रि के भोजन से आधा घंटा पहले गुनगुने पानी के साथ या चिकित्सक के परामर्शानुसार



### प्रत्येक 500mg में

सोंठ का सार	100 mg
गुग्गल शुद्ध	100 mg
लहसुन का सार	100 mg
पुष्कर मूल का सार	100 mg
पहाड़ी इमली का सार	100 mg

पैक :

1x5x10 कैप्सूल

# ग्लोकेयर किट



दैनिक जीवन में हम अपनी त्वचा का ध्यान नहीं रख पाते एवं उसके बचाव की सावधानियाँ भी कम होती जा रही हैं, बचाव के तौर पर रासायनिक फेशवॉश, क्रीम, फेस पैक इस्तेमाल करते हैं जो तुरन्त अच्छा परिणाम देते हैं परन्तु कुछ समयान्तरान्त त्वचा को नुकसान देने का कार्य करते हैं, हमें कुछ आयुर्वेदिक हर्बल तत्व त्वचा पर इस्तेमाल करने होंगे जो त्वचा को नुकसान से बचाए एवं सौंदर्य बढ़ाने का कार्य करे। इसके लिए आंतरिक और बाह्य दोनों तरह के उत्पाद की जरूरत पड़ेगी, इसी को देखते हुए कैप्सूल, फेसपैक, फेसक्रीम एवं फेशवॉश की श्रृंखला आपको दी जा रही है।



## ग्लोकेयर साफ्ट जिलेटिन कैप्सूल घृति 500mg जिसमें है

मंजिष्ठा  
नीमछाल, हरिद्रा, कुमारी,  
खदीरछाल, सरिवा, भृंगराज  
सिद्ध घृता विधि से तैयारजिसमें है:  
गाय का दूध 0.500ml  
गौ-घृति 500mg

## ग्लोकेयर फेस क्रीम

शालमाली, नींबू, हरिद्रा, सरिवा  
और कुमारी के सार और  
यस्तिमधु, यशद भस्म,  
टकण भस्मकुमकुमादी तेल

## ग्लोकेयर फेस पैक

अर्जुन, अम्बेहल्दी, नीम, तुलसी,  
लोधरा, गुलाब पाउडर,  
गेरा और उशिरा  
(मुलतानी मिट्टी, ग्लिसरीन  
और पानी का base)

## पैक :

ग्लोकेयर साफ्ट कैप्सूल- 30कैप्सूल  
ग्लोकेयर फेस क्रीम- 50g  
ग्लोकेयर फेस पैक- 75g

## ग्लोकेयर किट के लाभ

- झुर्रियों को दूर करे, नमी बढ़ाये।
- त्वचा में निखार लाने के लिए
- रक्त का प्रवाह चेहरे की ओर बढ़ा कर चेहरे में लालिमा बढ़ाने के लिए।
- त्वचा को सुन्दर चमकदार और लावण्ययुक्त बनाने के लिए।
- जीवाणुओं के संक्रमण से बचाए।
- रक्त शोधक और टोनर।
- त्वचा को जवों और चमक प्रदान करने के लिए।
- कील एवं मुहासों को दूर करने के लिए
- सूर्य की पराबैंगनी किरणों से एवं प्रदुषण से बचाने के लिए।

- **ग्लोकेयर साफ्ट कैप्सूल**- प्रत्येक सुबह नाश्ता के पहले दूध या गुनगुने पानी के साथ दो कैप्सूल रोज या चिकित्सक के परामर्शानुसार
- **ग्लोकेयर फेस क्रीम**- प्रत्येक सुबह और रात में चेहरे और गर्दन को साफ कर सुखा लें और फेस क्रीम लगाएं
- **ग्लोकेयर फेस पैक**- चेहरे को अच्छी तरह साफ करने के बाद अच्छी तरह से फेस पैक लगाए और 20उपदण तक छोड़ दें फिर इसे पानी से धो लें।



# केशसुधा किट

समय के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की केश-सज्जा लोगों की सुन्दरता एवं आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है, नये-नये तरीकों से बालों का श्रृंगार सुन्दरता बढ़ाने के लिए जरूरी है, महिला हो या पुरुष, दोनों में अपने स्वस्थ बालों के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। महिला और पुरुष दोनों के लिए अलग-अलग पार्लर खुल चुके हैं, जहाँ पर स्वस्थ केश की देख भाल के तरीके एवं उनसे संबंधित उत्पाद मिलते हैं, जो केशों को स्वस्थ और सुन्दर बनाने का दावा करते हैं। इस श्रृंखला का उत्पाद आपको समर्पित, जिसमें आप के लिए केश वर्धक कैप्सूल, शैम्पू और तेल सम्मिलित है।



## केशसुधा के लाभ

- 👍 घने, लम्बे, स्वस्थ एवं डेँड्रफ- मुक्त बालो के लिए।
- 👍 बालो को प्रदूषण से एवं गंदगी से बचाने के लिए।
- 👍 बालो को नया जीवन और उनमें चमक लाने के लिए।
- 👍 बालो को जड़ से सिर तक मजबूती देने के लिए
- 👍 बालो का गिरना कम करने के लिए
- 👍 बालो को ज्यादा टॉनिक देने के लिए
- 👍 बालो एवं सिर की त्वचा को संक्रमण से रक्षा करने के लिए
- 👍 बालो को रेशमी, चमकदार और जड़ से मजबूत करने के लिए
- 👍 सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी पूरी करने के लिए
- 👍 सूर्य से मिलने वाले विकिरण से बचने के लिए

### केशसुधा टैबलेट

भुगराज  
कुमारी  
मेथी  
मंदूकपर्णी  
भावना  
अमलाकी

### केशसुधा हेयर आयल

आँवला  
तिल तेल  
नारियल तेल  
मेंहदी  
ब्राह्मी  
जसबन्ध  
कमल फूल

### केशसुधा हेयर वाश

शिकाकाई  
रीठा  
मेथी  
नीम  
नींबू

पैक: केशसुधा टैबलेट-60 टैबलेट केशसुधा हेयर  
आयल-100ml केशसुधा हेयर वाश-200ml

# स्मृतिसुधा किट



स्मृतिसुधा का उपयोग दिमाग तेज करने, एकाग्रता बढ़ाने, याददाश्त बढ़ाने, तनाव दूर करने, अवसाद दूर करने, बालों से सम्बन्धित समस्याओं को दूर करने, मानसिक कमजोरी दूर करने, बालों के लिए टॉनिक एवम मानसिक एकाग्रता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।



Each Coated Soft Gelatin Capsule  
Contains Ghruta 500mg which consists of:

Brahmi (Bacopa monnieri)	193.55mg
Jyotishmati (Celastus paniculatus)	32.25mg
Vacha (Acorus calamus)	16.15mg
Shankhapushpi (Evolvulus alsinoides)	64.50mg
Mandukparnee (Centella asiatica)	129.05mg
Guduchi (Tinospora cordifolia)	64.50mg
Processed by the method of SIDDHA GHRUTA in	
Cow Milk	500mg
Go-ghruta	500mg

## प्रत्येक किट में

स्मृतिसुधा-60 साफ्ट कैप्सूल  
ब्राह्मीसुधा-60कैप्सूल  
शंखपुष्पीसुधा-60कैप्सूल

## स्मृतिसुधा किट

- ✓ बुद्धिर्वधक।
- ✓ मानसिक तनाव और अवसाद दूर करने में सहायक।
- ✓ मानसिक एकाग्रता बढ़ाने में उपयोगी
- ✓ दिमागी क्रिया कलाप तेज करे।
- ✓ एटीं आक्सीडेण्ट के गुणों से सम्पन्न
- ✓ बालों की सुरक्षा करने के साथ.साथ तनाव मुक्त करें।
- ✓ क्षुधार्वधक
- ✓ तनाव एवं अनिद्रा दूर करे।
- ✓ याददाश्त क्षमता बढ़ाये।

उपयोग विधि :खाली पेट, सुबह में स्मृतिसुधा के 2 साफ्ट कैप्सूल दूध या पानी के साथ लें। भोजन के बाद ब्राह्मीसुधा का 1 कैप्सूल और शंखपुष्पीसुधा का 1कैप्सूल दिन में 2 बार लें या चिकित्सक के परामर्शानुसार



लिव मी 12 उपयोगी जड़ी-बूटियों का शक्तिशाली सम्मिश्रण है जो लीवर की हर तरह की बीमारियों से रक्षा करने में प्रामाणिक रूप से सक्षम है। ये सारी जड़ी-बूटियाँ हमारे प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में उल्लिखित हैं और आधुनिक काल में भी इनकी उपयोगिता, कई क्लीनिकल परीक्षणों में सिद्ध हो चुकी है। प्राकृतिक होने की वजह से ये जड़ी-बूटियाँ, हमारे शरीर के विभिन्न अंगों और क्रिया-कलापों को बिना कोई साइड इफेक्ट पहुंचाए लाभ पहुंचाती हैं और इनका उपयोग लम्बे समय तक किया जा सकता है। लीवर की कई बीमारियों में इलाज लम्बे समय तक चलता है इसलिए एलोपैथिक दवाओं के रसायन शरीर को काफी साइड इफेक्ट्स भी दे जाते हैं। लिव-मी के उपयोग के बाद S.G.O.T. (सिरम ग्लूटामिक ऑक्सिलोएसिटिक ट्रांसअमिनेस) S.G.P.T. (सिरम ग्लूटामिक पाइरूविक ट्रांसअमिनेस) और सिरम बिलुरिबिन सामान्य स्तर पे आ जाते हैं और लीवर सुचारू रूप से कार्य करने लगता है।

## लिव मी के मुख्य संयोजक और उनके लाभ

- **सर्फूका (टेफ्रोसिया पर्पुरिया)** - यह औषधि लीवर और तिल्ली में आये अवरोधों को दूर करती है और पित्त जनित ज्वर को कम करती है। इस औषधि में प्राकृतिक नलिकाओं को खोलने की शक्ति होती है। यह कब्ज की समस्या को दूर करती है और पेट में पाई जाने वाली कृमियों को समाप्त करती है। इसे तिल्ली और लीवर की सूजन को कम करने में कारगर पाया गया है।
- **मक्कोय (सोलेनम निग्रम)** - यह पीलिया को कम करने में सहायक है क्योंकि इसमें पाए जाने वाले स्टेरॉयड्स लीवर के लिए लाभकारी सोलानिन और सोलासोनाइन उत्पन्न करते हैं।
- **भूमि आमला (फाइलेंथस निरुरी)** - इस औषधि में एल्कालोयड्स, टैनिन्स, पलेवोनोंइड्स, सैपोनिन्स जैसे फाइटोन्यूट्रीएंट्स पाए जाते हैं जो लीवर को स्वस्थ रखते हैं। यह लीवर सिरोसिस को रोकता है और नए लीवर उतकों के निर्माण में सहयोग करता है।
- **रेवांदचीनी (रेउम एमोदी)** - इसमें एमोडीन नामक एक ग्लाइकोसाइड पाया जाता है जो कब्ज की समस्या को दूर करता है। इसके अलावा यह पेट के हानिकारक बैक्टीरिया को मारता है और आंतों और लीवर की मांसपेशियों को मजबूत करके पाचनक्रिया को सुचारू बनाता है।
- **कुटकी (पीकोराइजा कुरोरा)** - इस औषधीय जड़ी-बूटी में कई प्रकार के ग्लूकोसाइड्स, कुछ स्टेरॉयड और ऐपोसाईटिन पाये जाते हैं। ऐपोसाईटिन में लीवर की सूजन और दर्द को कम करने की शक्ति पाई जाती है और ये कब्ज की समस्या को भी कम करता है। कुटकी लीवर उत्प्रेरक है और भूख भी बढ़ाता है। ये ज्वर घटाता है साथ ही एक कृमि-नाशक और हृदय के टॉनिक का भी कार्य करता है।
- **कसानी (सिकोरियम इंटैबरा)** - कसानी के अंदर पाये जाने वाले सक्रिय यौगिक हैं - ईनुलिन, विटामिन, खनिज, वसा, मैनिटोल, लेटेक्स और लेक्टोन। यह सारे यौगिक लीवर रक्षक होते हैं और पित्तस्राव की वृद्धि कर, लीवर को सुचारू रूप से कार्य करने में सहायक हैं।

सुराहक: लिव मी सिरप- 2 चाय की चम्मच से दिन में दो बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार  
लिव मी कैप्सूल- 1 या 2 कैप्सूल दिन में 2 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

## पैक:

लिव मी सिरप-200ml,  
लिव मी टैबलेट्स-60टैबलेट्स

## लिव मी निम्न अवस्थाओं में उपयोगी है

- \* पीलिया के इलाज में उपयोगी।
- \* हेपेटाईटिस- A के इलाज में उपयोगी।
- \* भूख न लगने की अवस्था में।
- \* फैटी लीवर की अवस्था में।
- \* विषाक्त पदार्थों से लीवर की सुरक्षा करता है।
- \* लीवर के चयापचय को संतुलित करता है।
- \* लिव मी शरीर में भोजन के बेहतर उपयोग में सहायक है।



## Each 10 ml contains

सर्फूका (Tephrosia Purpurea)	500mg
मक्को(Solanum Nigrum)	500mg
भूमि आमला(Phyllanthus Niruri)	500mg
रेवान्दचीनी(Rheum Emodi)	25mg
कुटकी(Picorhiza Kurora)	250mg
कसानी(Cichorium Intybus)	350mg
माई(Tamarix Gallica)	750mg
वावरिंग(Embelia Ribes)	75mg
पीपल(Piper longum)	225mg
अर्जुन छाल(Terminalia Arjuna)	75mg
भ्रिग राज(Eclipta Alba)	75mg
कालमेघ(Andrographis Paniculata)	75mg
Sugar Base	45%

# मोरोसिल सस्पेंशन



100 से भी अधिक प्रकार के लिवर की बीमारियाँ मनुष्य को शैशव-काल, यौवनावस्था या वृद्धावस्था किसी भी अवस्था में प्रभावित कर सकती हैं।

## लिवर की तीन सबसे घातक बीमारियाँ हैं

चर्बीदार (फैटी) लिवर, हेपेटाइटिस और सिरोसिस।

लिवर से जुड़ी अधिकतर बीमारियाँ गंदा पानी पीने, दूषित वातावरण में रहने, जंक फूड खाने, दवाइयों के साइड-इफेक्ट के कारण होती हैं।

शराब पीने वालों में लिवर की बीमारियाँ अधिक देखी जाती है जिसमें लिवर क्षतिग्रस्त हो जाता है और अपना कार्य उचित ढंग से नहीं कर पाता है। व्यक्ति के खाने-पीने का भी सीधा असर लिवर पर पड़ता है।

## सिलिमैरिन

- > यह अत्यंत प्रभावशाली एंटीआक्सीडेंट है
- > विषैले तत्वों को लिवर की कोशिकाओं में प्रवेश करने से रोकता है, क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को **regenerate** करता है।
- > सिरोसिस होने की सम्भावना को कम करता है, एवम पित्त के बहाव को बढ़ा कर वसा (fat) के पाचन को बढ़ाता है।

## लेसिथिन

- > तन्तु-ऊतकों (Fibrous tissue) को तोड़ने की प्रक्रिया को तेज करता है जिससे सिरोसिस होने की सम्भावना कम हो जाती है।
- > शराब पीने के कारण क्षतिग्रस्त हुए लिवर को दुरुस्त करता है,
- > लिवर को स्वस्थ रखने और लिवर के उचित कार्य-कलाप के लिए यह अत्यंत उपयोगी है।
- > लेसिथिन लिवर कोशिकाओं पर वसा के जमाव को रोकता है।

## विटामिन बी-कम्प्लेक्स

हेपेटायटीस बी और हेपेटायटीस सी वायरस, शरीर में विटामिन्स बी के स्तर को कम कर देते हैं। इसलिए उनकी कमी पूरी करने के लिए मोरोसिल में विटामिन बी-कम्प्लेक्स भी दिया गया है।

## उपयोग

सहायक थेरेपी (Supportive Therapy) के तौर पर

- लिवर सम्बन्धी बीमारी में
- हेपेटायटीस A
- औषधियों के विषाक्त प्रभाव से हुए लिवर की क्षति में
- अल्कोहलिक लिवर रोग में
- जॉडिस में
- सहायक उपचार के तौर पर एंटी टी. बी. दवाओं के साथ ,अल्कोहलिक हेपेटायटीस,
- क्रोनिक हेपेटायटीस, लिवर के सिरोसिस, इन्फेकटीव हेपेटायटीस B में।



## प्रत्येक कैप्सूल में:

सिलिमैरिन(80%) 70mg.  
सोया लेसिथिन 250 mg.  
विटामिन बी-कम्प्लेक्स

## प्रत्येक 5ml सस्पेंशन में:

सिलिमैरिन 80% 35mg.  
सोया लेसिथिन 125 mg.  
विटामिन बी-कम्प्लेक्स

## उपयोग विधि :

आहार पूरक के रूप में मोरोसिल सस्पेंशन: 1 चाय के चम्मच से रोज या चिकित्सक के परामर्शानुसार  
मोरोसिल कैप्सूल: 1-2 कैप्सूल रोज या चिकित्सक के परामर्शानुसार

पैक: 1X10 कैप्सूल



# गैस्टोमोर

## हर्बल एंटासिड

गैस्टोमोर गैस सम्बंधित समस्याओं से छुटकारा दिलाता है। यह अल्सर, अति अम्लता, खट्टी डकारों और गैस से छुटकारा दिलाता है। भोजन को पचाने के लिए एवं बैक्टीरिया को मारने के लिए पेट में एसिड का उत्पादन होता है। इस एसिड के अभाव में भोजन का पाचन सुचारू रूप से नहीं हो सकता लेकिन एसिड पेट की अंदरूनी सतह को गला भी सकता है। इससे बचने के लिए प्राकृतिक रूप से आंतों में एक अंदरूनी सुरक्षात्मक परत होती है। सामान्य रूप से इस सुरक्षा परत में कोई टूट-फूट नहीं होती है जिससे एसिड का दुष्प्रभाव आंतों पर नहीं होता।

जब इस परत में कहीं टूट-फूट हो जाती है तो ऐसी अवस्था में अल्सर उत्पन्न हो जाते हैं और व्यक्ति को काफी तीव्र दर्द होता है। यह दर्द सबसे अधिक छाती और पेट के बीच में होता है। इस अल्सर का मुख्य कारण बैक्टीरिया एच0पाईलोरी बैक्टीरिया द्वारा संक्रमण, लम्बे समय तक दर्द-निवारक दवाओं का सेवन, मसालेदार भोजन एवं तनाव हैं।

### गैस्टोमोर के लाभ

- **नागरमोथा**— भूख बढ़ाता है, गैस कम करता है, पेट दर्द से मुक्ति दिलाता है और पाचन-क्रिया के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करता है। नागरमोथा में संकोचक गुण होता है, जिससे यह आंतों की भीतरी परत में आई सूजन को कम करता है। पेट से उचित समय में भोजन को पेट से छोटी आंत की ओर भेजता है और पेट-दर्द को कम करने में सहायक है।
- **मुलेठी**— मुलेठी में लीवर संरक्षक गुण पाये जाते हैं जिससे यह लीवर कोशिकाओं को विषाणुओं एवं स्व-प्रतिरक्षा से होने वाले नुकसान से बचाता है। मुलेठी अल्सर को रोकने में सहायक है।
- **बंसा**— बंसा उलटी, मतली और खट्टी डकारों से छुटकारा दिलाने में सहायक है।
- **सोवा**— पेट फूलना और अधोवायु को कम करता है। सोवा भूख बढ़ाता है और साथ ही यह जठराग्नि वर्धक है जिससे खाना, आसानी से पचता है। सोवा हिचकियों को रोकने में अत्यंत लाभदायक है।
- **आंवला**— एक अदभुत फल है, जिसमें प्रकृति में पाया जाने वाला सबसे अच्छा और ज्यादा विटामिन-सी पाया जाता है। आंवला शरीर के त्रिदोषों वात, कफ और पित्त को संतुलित करता है। आयुर्वेद में भी आंवला को दीपनपाचन भूख बढ़ाने वाला और अनुलोम कब्ज घटाने वाला कहा गया है।
- **पीटपाप्रा**— यह आंतों की कृमियों और परजीवियों को नष्ट करता है और अतिअम्लता को घटाता है।



### गैस्टोमोर का योग-हर 10 ml में

नागरमोथा (सायप्रस रोटनडस)	120 mg
मुलेठी (ग्लाइसीराईजा ग्लैब्रा)	120 mg
बंसा (अधैतोदा वासिका)	120 mg
सोवा (अनेथम सोवा)	240 mg
आंवला (एम्ब्लिका ओपिफिसिनैलिस)	320 mg
पीटपाप्रा (फुमैरिया ओपिफिसिनैलिस)	160 mg
पटोलपत्र (ट्राईकोसैन्थिस डाईका)	320 mg
सिंघाड़ा (ट्रेपॉईडी बिसपिनोसा)	110 mg

पैक :  
200 ml

उपयोग : 10ml दिन में 3 बार, 10 ml पानी के साथ



# डायजेस्टमोर



- ✓ **सौंफ**– इसमें अनेक चमत्कारी औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो कि स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। सौंफ की तासीर ठंडी होती है। सौंफ में कैल्शियम, सोडियम, फॉस्फोरस, आयरन और पोटेशियम जैसे महत्वपूर्ण तत्व होते हैं पेट के कई विकारों जैसे दस्त, मरोड़, दर्द और गैस्ट्रो विकार का इलाज हो सकता है। पेट सम्बंधित सभी रोगों के लिए लाभकारी हैं। सौंफ पेट साफ करने वाला, उल्टी, दस्त, वायु विकार, पित्त, वमन उल्टी, पेट के सभी रोग जैसे अपच, कब्ज, अजीर्ण दस्त, खाने के बाद तुरंत दस्त लग जाना, आंव आना, पेट का दर्द आदि में अत्यंत लाभकारी है।
- ✓ **चित्रक**– आयुर्वेद में कफ एवं वात दोष का शमन करने वाली श्रेष्ठ औषधि माना गया है। भोजन को ठीक ढंग से पचाने में मदद करता है और पाचन क्रिया को उद्दीपित करता है। लीवर या प्लीहा से सम्बंधित समस्याओं में भी चित्रक एक अत्यंत कारगर औषधि के रूप में काम करता है। भूख बढ़ाने के लिए यह अति उत्तम है। पेट के मल को दस्त द्वारा साफ़ निकाल देता है। कफ, पित्त और वात को नष्ट करता है।
- ✓ **काली मिर्च**– काली मिर्च पाचन प्रक्रिया को बढ़ाने में मदद करता है, जिससे पेट में हाइड्रोक्लोरिक एसिड का स्राव बढ़ जाता है। पाचन में सुधार होने से पेट का दर्द, सूजन, अपच, पेट फूलना, कब्ज और पेट में गैस जैसी समस्याओं से राहत मिलती है। काली मिर्च पाचनशक्ति बढ़ाने के साथ-साथ भूख बढ़ाने में भी मदद करता है। काली मिर्च पेट में गैस बनने से रोकने में मदद करता है।
- ✓ **अजवाइन**– पेट में गैस, एसिडिटी, पेट खराब होने पर, पाचन तंत्र में किसी भी तरह की गड़बड़ी होने या बदहजमी होने पर इसके उपयोग से बहुत फायदा होता है। अजवाइन पाचक, रुचिकारक, पित्तवर्धक, वायुनाशक और कई प्रकार के अन्न को पचाने के लिए अत्यंत उपयोगी औषधि है। पेट के दर्द, वायु.गोला (आफरा), पेट फूलना तथा कृमि.रोग को नष्ट करने वाली है।



## Each 5 ml Contains:

Foeniculum Vulgare (saunf)	500mg
Plumbago Zeylanica (Chitrak)	100mg
Piper Nigrum (Kali Mirch)	50mg
Trachyspermum ammi (Ajwain)	150mg
Trifla(A.F.I)	500mg
Cassia Angustifolia(Sanai)	50mg
Mentha Spicata (Pudina)	225mg
Veronia Anthelmincticum ( Kala Zeera)	125mg
Cuminum Cyminum (Safed Zeera)	125mg
Sugar	40%
Color	Green (.005mg)
Preservatives	SB 30 mg,MPS 15mg
PPS-3 mg	

- ✓ **त्रिफला**– यह 3 औषधियों से बनता है। बहेड़ा, आंवला और हरड इन तीनों के मिश्रण से बना चूर्ण त्रिफला कहा जाता है। यह पेट की समस्याओं के लिए बहुत ही कारगर माना जाता है। त्रिफला शरीर में वात, पित्त और कफ का संतुलन बनाए रखता है। त्रिफला पाचन क्रिया को ठीक करने वाली और भूख को बढ़ाती है।
- ✓ **सेन्ना या सनाथ**– सेन्ना कब्ज की समस्या को दूर करने वाली उपलब्ध जड़ी बूटियों में से सबसे सुरक्षित है। आंत साफ करने में मदद करती है। मन्दाग्नि, कब्ज, अपच और लीवर और पेट के रोगों में प्रयोग किया जाता है।
- ✓ **पुदीना**– पुदीना विटामिन.सी का भी अच्छा स्रोत है। आयुर्वेद में पुदीने को वायुनाशक जड़ी.बूटी के रूप में देखा जाता है। जिसके उपयोग से सीने में जलन, मितली, पेट दर्द और आंतों की ऐंठन से आराम मिलता है। इसके सेवन से पाचन क्रिया दुरुस्त रहती है। अजीर्ण और पेट दर्द में भी अत्यंत उपयोगी है। पुदीना शरीर से टॉक्सिन और फ्री रैडिकल को निकालने में भी मदद करता है।
- ✓ **काला जीरा**– पेट और पाचन क्रिया के लिए जीरा बहुत अच्छा होता है। पेट दर्द, अपच, डायरिया, में इसका सेवन जरूर करना चाहिए। छोटी आंत में गैस हो जाने, पेट दर्द होने, कब्ज जैसी तकलीफों में भी आराम देता है। यह कब्ज को दूर कर पाचन क्रिया को आरामदायक बनाता है। यह पेट के कीड़ों को भी मारता है।
- ✓ **सफेद जीरा**– सफेद जीरा को हम मसाले और छौंकने में प्रयोग करते हैं। काला जीरा की तरह यह भी पित्तकारक, मलावरोध, रुचिकारक, पित्तकारक, कफनाशक है। अजीर्ण, पेचिश, खट्टी डकारें, से निजात दिलाता है। अम्लपित्त के बाद होने वाली सीने की जलन में भी उपयोगी है।

**पैक:**  
200ml

**उपयोग विधि:** 2 चाय की चम्मच से दिन में तीन बार बराबर पानी की मात्रा के साथ या चिकित्सक के परामर्शानुसार



## हेमकैल-डी शिरप

### प्राकृतिक आयरन और कैल्शियम का खजाना -

हेमकैल-डी में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों से प्राप्त सभी अवयवों के अनेकों लाभ हैं और जिससे साईड इफेक्ट भी नहीं होता और सिंथेटिक कैल्शियम एवं आयरन के मुकाबले इसका अवशोषण भी सुगमता से होता है। हालांकि, कैल्शियम एवं आयरन की आवश्यकता हर उम्र और अवस्था में होती है लेकिन गर्भवती स्त्रियों, बढ़ते शिशुओं, शाकाहारियों, रजोनिवृत्ति से ठीक पहले और बाद की अवस्था में, स्तनपान कराने वाली माताओं और बार-बार रक्तदान करने वाले व्यक्तियों में ज्यादा होती है। आयरन का महत्व शरीर की कई चयापचयिक गतिविधियों में है।

### आयरन का महत्व

मनुष्य के शरीर में लगभग 3.5 ग्राम आयरन पाया जाता है। इसका अधिकांश भाग लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है (2.3 ग्राम)। बचा हुआ आयरन मांसपेशियों और एन्जाइमस में (0.35 ग्राम), लीवर, मैक्रोफेज और अस्थि-मज्जा में (0.85 ग्राम) पाया जाता है। शरीर से प्रतिदिन लगभग 1-2 मिलिग्राम आयरन का ह्रास होता है। आयरन शरीर के लिए एक अत्यंत आवश्यक तत्व है।

### कैल्शियम का महत्व

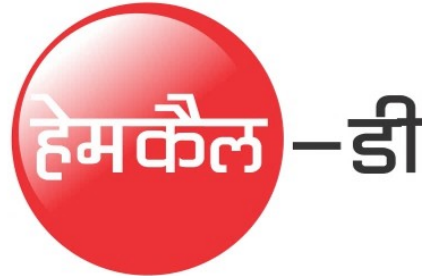
- हड्डियों के विकास में महत्वपूर्ण कारक
- रक्त के थक्के बनाकर रक्तस्त्राव को रोकना
- रक्तचाप को संतुलित रखना
- ग्लूकोज का कोशिकाओं में उपयोग बढ़ाने में उपयोगी
- मांसपेशियों की कोशिकाओं के संकुचन में सहायक
- शुक्राणुओं को अण्डों तक पहुँचाने में सहायक

### उपयोग

- गर्भवती महिलाओं में
- स्तनपान कराने वाली महिलाओं में
- बढ़ती उम्र के शिशुओं में (6वर्ष से 14वर्ष के बीच)
- आपरेशन के बाद

उपयोग विधि: वयस्क: 2 चाय के चम्मच से दिन में 3 बार  
बच्चे: 1 चाय के चम्मच से 2-3 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

पैक:  
200ml



### हेमकैल-डी के हर 10 ml में

अर्जुन छाल	53mg
आंवला	80mg
गोखरू	80mg
शतावर	160mg
पालक	300mg
अंजीर	80mg
मुनक्का	160mg
बहेडा	30mg
अतिबला	110mg
चने का छिलका	300mg
सेब	110mg
गाजर	300mg
सिंघाड़ा	110mg

# पाईलो बीट

## टैबलेट और ऑइंटमेंट



पाईल्स (बवासीर) या हेमोरोइड्स गुदा और रेक्टम की बीमारी है। गुदा-क्षेत्र में शिरायें सूज जाती हैं और रक्त-स्राव होने लगता है। बवासीर में रक्त-नलिकाएं चौड़ी हो जानती हैं जबकी फिशर में गुदा मार्ग में मल के कड़े ही जाने के कारण जख्म हो जाते हैं।

बवासीर विभिन्न आकार का होता है और यह आंतरिक (गुदा के भीतर) या बाहरी (गुदा के बाहर) हो सकता है। आंतरिक बवासीर गुदा छिद्र के 2 से 4 cm भीतर की ओर होता है जबकि बाहरी बवासीर गुदा के बाहरी किनारे पर होता है।



### पाईल-ओ-बीट के प्रत्येक कैप्सूल में है

अर्शकुठार रस (A. F. I. )	100 mg
अर्शोधनी वटी (A. F. R.)	150 mg
एल्वा शुद्ध (एलोवेरा)	75 mg
हरड़ चोटी (टर्मिनेलिया चेबुला)	200 mg
कहवारा पिष्टी (A. F. I.)	25 mg

### पैक -

10X10 कैप्सूल, 30gm ointment  
में भी उपलब्ध

### पाईल-ओ-बीट के प्रत्येक कैप्सूल में है

- **अर्शकुठार रस**— कई औषधिय पौधों के मिश्रण से तैयार किया हुआ रस है यह पाचन-शक्ति को बढ़ाता है और भोजन के पाचन में सहायता करता है। यह वात और कफ को नियंत्रित करता है।
- **अर्शोधनी वटी** - इसका उपयोग दोनों प्रकार की बवासीर (रक्तस्राव वाली और बिना रक्तस्राव वाली) के उपचार में किया जाता है। यह बवासीर के आकार को कम करता है और रक्तस्राव को रोकता है।
- **एल्वा शुद्ध (एलोवेरा)** - प्राकृतिक एलोवेरा का उपयोग बवासीर में बहुत ही प्रचलित उपचार है। यह भोजन के पाचन में विटामिन और पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाता है। यह सूजन, जलन और दर्द को कम करने में सहायक है। इसका उपयोग बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार के बवासीर में लिया जाता है। एलोवेरा सुचारु और नियमित मल त्याग में सहायक है।
- **हरड़ चोटी (टर्मिनेलिया चेबुला)** - इसे हरितकी भी कहते हैं। यह बवासीर, भगंदर और गुदा-मलाशय सम्बन्धी रोगों में बहुत ही लाभदायक है। यह पाचक रसों के स्राव को बढ़ाता है और अवशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने में सहायक है। इसकी विशेषता है कि कब्ज को भी दूर करता है, आँतों के द्वारा फ्लुइड्स को अवशोषित करने में सहायक है और यह पेट साफ रखने में बहुत प्रभावकारी है।
- **कहवारा पिष्टी** - इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधि के तौर पर दस्त, मासिक-सम्बन्धी रोगों और रक्त-स्राव वाले बवासीर में किया जाता है।

**उपयोग विधि :** 1 या 2 कैप्सूल रोज 2 बार पानी के साथ  
या चिकित्सक के परामर्शानुसार



## खांशी दो प्रकार की होती है

1. सूखी खांसी – श्वसन-तंत्र के ऊपरी भाग में आई सूजन के कारण होती है। सामान्यतया यह किसी संक्रमण के कारण होती है। इसमें मरीज खांसता है लेकिन बलगम नहीं निकलता।
2. बलगम वाली खांसी – मरीज के खांसने पर बलगम निकलता है और यह सामान्यतया एलर्जी और संक्रमण, दोनों के कारण होती है।  
खांसी कफ सिरप दोनों ही प्रकार की स्थितियों में लाभदायक है। खांसी 14 प्राकृतिक औषधीय वनस्पतियों का प्रभावकारी सम्मिश्रण है जो बिना साईड-इफेक्ट के खांसी के दोनों प्रकारों को और एलर्जीजनित या संक्रमणजनित खांसी को कम करने में प्रभावकारी है।

## खांसी कफ सिरप के अवयव

- **शोमलता**– इस औषधि में इफेड्रिन और स्यूडोफेड्रिन पाए जाते हैं जो एड्रेनलिन की तरह कार्य करते हैं। यह फेफड़ों की नलिकाओं को फेला देते हैं जिससे सांस लेने में आराम मिलता है।
- **बनफ़ूसा**– यह फेफड़ों में जमे हुए बलगम को बाहर निकालने में सहायक है। यह खांसी और बुखार दोनों को कम करता है।
- **नौशदार**– इसका उपयोग एक कफ निस्सारक के रूप में होता है। यह श्वास-नलिकाओं को उत्प्रेरित करता है एवं बलगम के गाढ़पन को कम करता है। इससे बलगम को बाहर निकालने में मदद मिलती है।
- **टंकण भरम**– यह श्वास नली के संक्रमण को कम करता है और बलगम को बाहर निकालने में भी सहायक होती है।
- **जुफा**– इसमें बायोफ्लेवोनोइड्स पाए जाते हैं जो बलगम के छोटे टुकड़े करने में सहायक है। यह श्वास-नली में पाए जाने वाले सिलिया की गति को बढ़ाते हैं जिससे बलगम आसानी से बाहर आता है।
- **पुदीना**– पुदीने में सूखी खांसी और दमा को ठीक करने की विशेष क्षमता होती है।
- **मुनक्का**– यह श्वास नलिकाओं को संकुचित नहीं होने देता और बलगम को बाहर निकालने में सहायक है।
- **कटकारी**– यह एलर्जी से होने वाली खांसी को रोकने में विशेष सहायक है।
- **मुलेठी**– यह श्वसन-तंत्र की नलिकाओं पर एक सुरक्षा कवच का कार्य करता है।
- **बड़ी इलायची**– यह विटामिन सी फाइबर और खनिज लवण देता है, जिससे शरीर की प्रतिक्षा-प्रणाली मजबूत होती है।
- **काली मिर्च**– सभी प्रकार की खांसी में लाभकारी है क्योंकि यह गाढ़े बलगम को पतला कर देता है।
- **तुलसी**– यह बलगम को शरीर से बाहर निकालता है। दमा और जुकाम में विशेष लाभकारी है।
- **शोंठ**– इसमें प्लेटलेट्स को उत्प्रेरित करने की क्षमता होती है जिससे एलर्जी और इन्फ्लुएंजा के मरीजों को लाभ पहुँचाता है।

उपयोग विधि: वयस्क: 1-2 चाय के चम्मच से गुनगुने पानी के साथ या चिकित्सक के परामर्शानुसार

पैक :  
100ml



## Each 10 ML Contains Extract Of :

Ephedra	Somlata	100mg
Vioe odorata	Banafsha	50mg
Ammonium chloride	Noshadar	10mg
Tanken Bhashm	A.F.I	10mg
Potassium nitro	Kalmishora	10mg
Alphagi camelorum	Jufa	50mg
Vitis vinifera	Munaka	50mg
Solanum xanthocarpum	Kantkari	100mg
Mentha sylvestris	Satpitina	2mg
Glycrrhiza glabra	Mulathi	50mg
Elettaria cardamomum	Bari Ilaichi	10mg
Piper cubeba linn	Kali Mirch	10mg
Ocimum sanctum	Tulsi	25mg
Zingiber officinalis	Adrak ras	25mg

# डी-स्टोन



प्रत्येक वर्ष आधे करोड़ से अधिक लोग किडनी स्टोन समस्या से ग्रसित होकर अस्पतालों के आकस्मिक चिकित्सा विभाग में जाते हैं। किडनी स्टोन की समस्या तब होती है जब मूत्र में मौजूद साल्ट्स ठोस क्रिस्टल बना लेते हैं। ये स्टोन्स मूत्र-नली के मार्ग को अवरुद्ध कर देते हैं। इसके कारण इन्फेक्शन हो सकता है और किडनी डेमेज हो सकती है या अपना काम करना बंद कर सकती है। किडनी स्टोन्स भिन्न-भिन्न आकारों में और भिन्न-भिन्न जगहों पर विकसित हो सकते हैं। किडनी में बने स्टोन्स को गुर्दों की पथरी कहते हैं।



**पैक :**  
60 टैबलेट्स

## डी.स्टोन की प्रत्येक टैबलेट में है

ट्रिब्यूलस टेरेंसट्रिस (गोखरू एक्सट्रैक्ट)	:60 mg
बरजीनिया लिग्यूलाटा (पाषाणभेद एक्सट्रैक्ट)	:60 mg
बोएरहैविया डिफ्यूसा (पुनर्नवा एक्सट्रैक्ट)	:60 mg
ब्यूटियामोना स्पर्मा (पलाश पुष्प)	:50 mg
अफैलम (शुद्ध शिलाजीत)	:20 mg
क्रेटीवा नर्वाला (वरुण छाल एक्सट्रैक्ट)	:55 mg
एकीरेंथस एस्पेरा (अपमार्गसार)	:20 mg
हजरल यहूद भस्म	:50 mg
श्वेत पर्पटी	:25 mg
एकेशिया गम (गोंद)	:30 mg
शर्करा	:q-s-

## किडनी या गुर्दे में स्टोन या पथरी होने के एक या एक से ज्यादा लक्षण हो सकते हैं, जैसे

- पीठ के निचले हिस्से के दोनों ओर बहुत ज्यादा दर्द होना
- पेट में दर्द का उठना और दर्द का बने रहना
- मूत्र में रक्त का आना
- मिचली या उल्टी आना
- बुखार और ठण्ड लगना
- मूत्र में बहुत ज्यादा दुर्गन्ध आना

## किडनी में स्टोन होने के कारण

- मूत्र में कैल्शियम, ऑक्सलेट, सिस्टाइन, या यूरिक एसिड का स्तर ज्यादा हो जाने पर स्टोन बनता है।
- मूत्र में इनके सामान्य स्तर पर रहने पर भी स्टोन बन सकता है।
- अन्य बीमारियों के उपचार के लिए ली गयी औषधियों के प्रयोग से भी स्टोन का बनना संभव है।

## डी.स्टोन के लाभ

- पेट दर्द, मरोड में फायदे मंद
- सूजन खत्म करे
- पेट में ऐठन में फायदेमंद
- पेशाब से मेग्निशियम का प्रवाह रोके
- पेशाब रुक-रुक कर न होने दे
- पेशाब की जलन में राहत दे
- मूत्र नली की गांठो को दूर करे

**उपयोग विधि :** 1 टैबलेट दिन में 2 या 3 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार



## डायबोसुधा किट

डायबोसुधा किट मधुमेह में रोगियों के लिए एक अमूल्य वरदान है। मधुमेह के रोगियों को इस किट के द्वारा मिलने वाले प्राकृतिक तत्व अमृत के सामान हैं जो इसके नाम " डायबोसुधा को सार्थक सिद्ध करते हैं।

मोटापा और आनुवंशिक कारणों से भारतीयों में मधुमेह की शिकायत पश्चिमी देशों की अपेक्षा ज्यादा पाई जाती है। एक रिपोर्ट के अनुसार 6.13 करोड़ भारतीयों में डायबिटीज की शिकायत पाई जाती है और 7.72 करोड़ में डायबिटीज होने की सम्भावना बनी हुई है। इसलिए भारत को डायबिटीज की राजधानी कहा जाता है।

### डायबोसुधा किट से मरीजों को प्राप्त होने वाले लाभ

1. रक्त में शुगर के स्तर को सामान्य बनाये रखता है।
2. डायबिटीज के मरीजों को दीर्घकालिक जटिलताओं से बचाता है।
3. पैनक्रिया की कोशिकाओं को पुनर्जीवित करने में सहायक है।
4. यह अंगविच्छेद, किडनी ट्रांसप्लांट और आँखों के ऑपरेशन से बचाता है और इस प्रकार मरीजों के आर्थिक बोझ को कम करता है।
5. लम्बी अवधि तक उपयोग करने के लिए सुरक्षित।
6. डायबिटीज के मरीजों को एक स्वस्थ और खुशनुमा जीवन बिताने में सहायक।
7. डायबिटीज के मरीजों को कार्यस्थल पर चुस्त रखता है और क्रियाशीलता और कार्यक्षमता बढ़ाता है।
8. यह मरीजों की यौन क्षमता को बनाये रखता है और एक सामान्य दांपत्य जीवन बिताने में सहायक है।
9. यह किडनी, हृदय और आँखों को डायबिटीज से होने वाली हानि से सुरक्षित रखता है।

### प्रत्येक किट में :

डायबोसुधा जार-60 टैबलेट्स, जम्बूकेयर जार-60 कैप्सूल्स,  
करेलाकेयर जार-60 कैप्सूल्स

सूत्रक: डायबोसुधा की एक टैबलेट, जम्बूकेयर और करेलाकेयर के एक-एक कैप्सूल दिन में 2 बार, भोजन के पहले या चिकित्सक के परामर्शानुसार



### डायबोसुधा टैबलेट प्रत्येक टैबलेट में

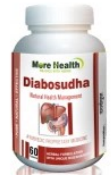
आंवला ( एम्ब्लिका ओफिसिनेल ) –	100 mg
बेलपत्र ( इगल मेमिलोस ) –	25 mg
बिवाला ( टेरोकारपस मारसुपियम ) –	75 mg
गुडमार ( जिम्नेमा सिल्वेस्टरे ) –	50Ex
गुडुची ( टीनोस्पोरा कोरडीफोलिया ) –	100 mg
हल्दी ( कुरकुमा लोंगा ) –	25 mg
जम्बुबीज ( साईजियम क्युमिनी ) –	30Ex
करेला ( मोमोरडीका चिरेंसिया ) –	25 mg
मामेजावा ( अनिकोस्तेमा लीटोरेल ब्लूम ) –	50 mg
त्रिकटु चूर्ण ( जेनेरिक ) –	70 mg
भावना द्रव्य : कुमारी स्वरस वट, उदुम्बर	

### जम्बूकेयर जार प्रत्येक 425mg कैप्सूल में-

जम्बुबीज सार (यूगिनिया जम्बोलाना ) –	250mg
जम्बुबीज चूर्ण (यूगिनिया जम्बोलाना ) –	175 mg
( 2% बिटर = 8.5 mg – 6% सेपोनिंस = 25.5 mg )	

### करेला केयर जार प्रत्येक 450mg कैप्सूल में

करेला सार ( मोमोर्डिका चेरेंसिया ) –	250 mg
करेला चूर्ण ( मोमोर्डिका चेरेंसिया ) –	200 mg
( 2% बिटर = 9.9 mg )	



# आर्थोसुधा किट



आर्थोसुधा किट एक अद्वितीय आयुर्वेदिक उत्पाद है जिसे सिद्धघृता विधि के द्वारा बनाया गया है जिसके कारण इसके सभी तत्वों की शक्ति कई गुणा बढ़ गयी है। घृत को योग- वहिवा भी कहा जाता है क्योंकि यह सभी निहित तत्वों के गुणों को कई गुना बढ़ा देता है। इसे संस्कारानुवर्तना भी कहा जाता है क्योंकि जिन तत्वों को इसमें संसाधित किया जाता है, यह उनके गुणों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। ब्रिटिश फार्माकोपिया (2009) के द्वारा इसे बहुत सारे फोर्मुलेशंस बनाने के लिए माध्यम के रूप में मान्यता दी गयी है।



## प्रत्येक आर्थोसुधा जार सॉफ्ट जेल कैप्सूल में है

निर्गुंडी (वाइटेक्स निगुण्डो):	45.45 mg
मेथी (ट्राईगोनेला फीनम ग्रीकयूम):	45.45 mg
सुंठी (जिंजिबर ओपिफिसिनेल):	22.75 mg
महारसानदी (जेनेरिक)	: 90.90 mg
शलाकी (बोसवेलिया सीराटा)	: 45.45 mg
चॉपचिनी (रियुम इमोदी) :	22.75 mg
शुद्ध लक्षा (लैक्सीफर लेक्का) :	45.45 mg
शुद्ध गुग्गुल (बालसमोदैनद्रोन मुकुल) :	45.45 mg
अस्थिश्रंखला (वाईटिस क्वानड्रेनगुलेरिस) :	45.45 mg
सिद्ध घृता की विधि के द्वारा निम्नलिखित में बनाया गया	
गाय का दूध :500 mg	
गौ-घृत:500 mg	

## प्रत्येक शलाकीसुधा जार सॉफ्ट जेल कैप्सूल में है

शलाकी सार (बोसवेलिया सीराटा) :300 mg

(65% बोस्वेलिक एसिड =195 mg )

## प्रत्येक गुग्गुलसुधा जार सॉफ्ट जेल कैप्सूल में है

शुद्ध गुग्गुलसुधा ( कोमीफोरा मुकुल ) – 500 mg

( 1 % गुग्गाल्स्टेरॉस=5 mg )

स्वास्थ्य सहायक, पुस्तिका

## आर्थोसुधा के लाभ

- आर्थोसुधा - जोड़ों के दर्द और सूजन से राहत दिलाता है।
- आर्थोसुधा - सुबह में जोड़ों में जकड़न को कम करता है और गतिशीलता में सुधार लाता है।
- आर्थोसुधा - रुमेटॉयड आर्थराइटिस के साथ ही पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस दोनों में राहत देता है।
- आर्थोसुधा - जोड़ संबंधी विकृति से बचाता है।

## आर्थोसुधा किट के उपयोग से लाभ

- 1. निर्गुंडी (वाइटेक्स निगुण्डो)**– यह रक्त में TNF-अल्फा, IL-1 बीटा, IL-6 को घटाता है और IL-10 को बढ़ाता है। साथ ही यह Cox-2 और 5-लौक्स को नियंत्रित करता है जिससे यह दर्द, सूजन और जकड़न को कम करके गठिया के रोगियों को आराम पहुँचाता है।
- 2. मेथी (ट्राईगोनेला फीनम ग्रीकयूम)**– यह एक इस्ट्रोजन की तरह कार्य करता है इस गुण के कारण मेथी अस्थियों के ह्रास को रोकता है और गठिया को रोकने में सहायक है।
- 3. सुंठी (जिंजिबर ओपिफिसिनेल)**– इसमें दर्द और सूजन को कम करने की क्षमता पाई जाती है। साथ ही यह एक एंटीऑक्सीडेंट है और कोशिकाओं और अस्थियों पर मुक्त कणों से होने वाले दुष्प्रभाव को कम करके गठिया को रोकने में प्रभावकारी है।
- 4. महारसानदी (जेनेरिक)**– यह 30 औषधीय वनस्पतियों के रस का सम्मिश्रण है जो गठिया और उससे होने वाले कष्टों से मुक्ति देता है।
- 5. शलाकी (बोसवेलिया सीराटा)**– इसमें आवश्यक ऑयल और क्षार पाए जाते हैं जो जोड़ों की जकड़न, दर्द और सूजन को कम करते हैं और गठिया के रोगियों को चलने फिरने में सुविधा होती है।
- 6. शुद्ध गुग्गुल (बालसमोदैनद्रोन मुकुल)**– यह शरीर में कोलेस्ट्रॉल कम करता है और वजन कम करता है। इससे घुटनों पर दबाव कम होता है और गठिया रोकने में सहायता मिलती है।

## पैक:

आर्थोसुधा-60 कैप्सूल्स,  
शलाकीसुधा-60 कैप्सूल्स,  
गुग्गुलसुधा-60 टैबलेट

स्वराज: 2 आर्थोसुधा सॉफ्ट कैप्सूल्स सुबह में पानी या दूध के साथ, भोजन के पहले खाली पेट में। शलाकीसुधा का एक कैप्सूल और गुग्गुलसुधा का एक टैबलेट दिन में 2 बार भोजन के बाद या चिकित्सक के परामर्शानुसार



## जॉइंट रेस्ट एडवांस

जोड़ों में दर्द की शिकायत अघेड़ और वृद्धों को अधिक होती है। जोड़ों का दर्द कोई बीमारी नहीं बल्कि एक लक्षण है जो निम्न कारणों से हो सकता है—

- **ऑरिंटो आर्थराइटिस**— यह गठिया बढ़ती उम्र के साथ होता है और इसका मुख्य कारण जोड़ों के मध्य पाई जाने वाली कार्टिलेज का घिस जाना है।
- **रोरियाटिक आर्थराइटिस**— यह जोड़ों और त्वचा को प्रभावित करने वाली दीर्घकालिक बीमारी है। इसमें त्वचा और जोड़ों में सूजन और दर्द रहता है।
- **रेटिक आर्थराइटिस**— यह जोड़ों में संक्रमण की वजह से होता है।
- **गाउट**— यह जोड़ों में यूरिक-एसिड कणों के जमा होने से होता है। विशेष रूप से टखनों, पैरों की उँगलियों और एड़ियों के आस-पास दर्द रहता है।

### जॉइंट रेस्ट एडवांस के फायदे

- यह जोड़ों और उनको सहारा देने वाली मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।
- यह हड्डियों के घनत्व को बढ़ाता है और मजबूत हड्डियों के निर्माण में सहायक है।
- यह जोड़ों में हुए घाव या चोट से होने वाले दर्द को कम करता है।
- यह गठिया रोग की रोकथाम करता है।
- यह मांसपेशियों में होने वाली सूजन और दर्द को रोकता है।

### जॉइंट रेस्ट एडवांस में ग्लुकोसामिन के फायदे

ग्लुकोसामिन कार्टिलेज को स्वस्थ रखता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ जोड़ों में ग्लुकोसामिन की मात्रा घटती जाती है और यह जोड़ों के क्षय का प्रमुख कारण है। ग्लुकोसामिन के उपयोग से इस क्षय को रोका जा सकता है और गठिया से होने वाले दर्द और सूजन को कम किया जा सकता है। ग्लुकोसामिन शरीर के अन्दर **G.A.G.** (ग्लाइकोसामिनोग्लाइकान्स) को बढ़ाने में मदद करता है और कार्टिलेज को मजबूत बनाता है।

### सलाईगुग्गुल-

सलाईगुग्गुल में बॉसवेलिक एसिड और पोलिसाल पाई जाती है जो सूजन और दर्द को कम करने में प्रभावी हैं। जॉइंट रेस्ट एडवांस में पाई जाने वाली सलाई गुग्गुल पानी में घुलनशील है और इसके अन्दर वसा और जल दोनों में घुलनशील पदार्थ हैं जो शरीर के विभिन्न हिस्सों में शीघ्रता से पहुँच कर अपना प्रभाव दिखाते हैं।

उपयोग विधि : 2 कैप्सूल्स दिन में दो बार या  
चिकित्सक के परामर्शानुसार

पैक :  
60 कैप्सूल्स



### जॉइंट रेस्ट के मुख्य संयोजक

ग्लुकोसामिन	500mg
एलोवेरा	10mg
सेलेनियम	50mcg
बासविलिया	25mg
M.S.M.	100mg
मैंगनीज सल्फेट	20mg
सर्कुमिन	25mg
विटामिन-सी	25mg
क्रोमियम	50mcg



डेन्टा

लाइफ प्लस



अद्वितीय आयुर्वेदिक युजिकरण  
जिसमें हैं :

नीम

लौंग

स्पीअरमिन्ट

मेंथोल

### ✓ नीम का रस

- मसूड़ों को रोगमुक्त रखता है और कैविटी नहीं बनने देता है।
- मसूड़ों के सूजन और कैविटी बनाने वाले बैक्टेरिया को नष्ट करता है।
- मसूड़ों को स्वस्थ रखता है।
- बैक्टेरिया को दांतों के सम्पर्क में आने नहीं देता है।
- मुंह के भीतर प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- साँसों में ताजगी लाता है।

### ✓ लौंग का तेल

- लौंग भले ही छोटी है, मगर इसके प्रभाव बड़े गुणकारी हैं। साथ ही लौंग का तेल भी काफी लाभकारी होता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, फास्फोरस, सोडियम, पोटेशियम, विटामिन ए और सी पाया जाता है।
- दांतों में होने वाले दर्द में लौंग के इस्तेमाल से निजात मिलती है।
- खांसी और बदबूदार साँसों के इलाज के लिए लौंग बहुत कारगर है।
- इसका उपयोग एंटीसेप्टिक के रूप में किया जाता है।

### ✓ स्पीअरमिन्ट

- साँसों को ताजगी और खुशबू प्रदान करता है।
- एन्टीबैक्टीरियल होने के कारण मुंह और गले को संक्रमण से बचाता है।
- इसमें मेंथोल होने के कारण शान्तिदायक और सुखद एहसास देता है।
- इसमें विद्यमान एन्टीआक्सीडेंट्स, फ्री रेडिकल्स को नष्ट कर उनसे रक्षा करते हैं।

### ✓ मेंथोल

- श्वाँस के दुर्गन्ध को दूर करता है।
- ओरल कैविटी में बैक्टीरिया के वृद्धि को रोकने में कारगर है।
- इसके ठन्डेपन की अनुभूति सुखद एहसास कराती है।

अपने दांतों को कम से कम दो बार ब्रश करें, अच्छी सफाई के लिये इसे पर्याप्त समय दें। प्रत्येक दिन, कम से कम दो बार दो मिनट तक ब्रश करना चाहिए। अपने टूथब्रश को अपने दांतों से हल्के कोण पर पकड़ें और आगे और पीछे करते हुए ब्रश करें। अपने दांतों की भीतरी और चबाने वाली सतहों और जीभ पर ब्रश करना न भूलें, तेजी से न रगड़ें, वरना आपके मसूड़े को क्षति पहुंच सकती है। अपनी जीभ की सफाई भी करना याद रखें।

पैक: 100g



# फ्रेसिया

## माउथ वाश

किसी व्यक्ति की दुर्गंधभरी साँसों: एक शर्मनाक स्थिति होती है। नियमित रूप से ब्रश नहीं करने से मुँह और दांतों के बीच फंसा भोजन बैक्टीरिया पैदा करता है। बैक्टीरिया द्वारा उत्सर्जित सल्फर, यौगिक के कारण साँसों में दुर्गंध पैदा करता है। मुँह में एक प्रकार का ग्राम.नेगेटिव एनारोबिक बैक्टीरिया विशेषतः श्वास में दुर्गंध पैदा करता है। लहसुन, प्याज, अल्कोहल, कोफी जैसे कुछ खाद्य और पेय पदार्थों के उपयोग या धूम्रपान से साँसों की दुर्गंध पैदा होती है। सायनस, गले में संक्रमण, शुष्क मुँह या किसी बीमारी के कारण भी साँसों में दुर्गंध हो सकती है।

कुल्ला करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि केवल ब्रश करने से ही आपके दांतों और मसूड़ों के बीच फंसे हानिकारक सड़न और खाने के टुकड़े दूर नहीं हो सकते। माउथ वाश के उपयोग से साँसों में ताजगी आती है, कैविटीज बनने और मसुडों में सुजन होने की संभावना कम हो जाती है।

### क्लोरोहेक्सीडाईन ग्लूकोनेट

फ्रेसिया माउथ वाश में मौजूद क्लोरहेक्सीडाईन ग्लूकोनेट में जीवाणुओं को मारने की क्षमता होती है, इसलिए इसके द्वारा कुल्ला करने से मुँह के अन्दर मौजूद बैक्टीरिया की संख्या बहुत कम हो जाती है। मसुडों के इन्फ्लामेशन (लाली, सुजन, रक्तस्राव) के उपचार में यह बहुत प्रभावकारी है।

### सोडियम फ्लोराइड

दांतों को मजबूत बनाने, कैविटी बनने से रोकने, अम्ल और बैक्टीरिया के द्वारा होने वाले दांतों की सड़न को रोकने में सोडियम फ्लोराइड बहुत उपयोगी है। यह प्लेक दूर करता है और दांतों में मिनरल्स के क्षरण से हुए क्षति को फिर से दुरुस्त करने में सक्षम है।

### जिंक क्लोराइड

खोजों के परिणाम बताते हैं कि माउथवाश में जिंक का रहना आवश्यक होता है क्योंकि यह दुर्गंध तो दूर करता ही है, साथ ही बहुत कम टार्टर बनने देता है। टार्टर के कारण साँसों में दुर्गंध पैदा होती है। जिंक क्लोराइड के उपयोग से कारण दांतों में कांति आती है, दांतों और ओरल कैविटी से दुर्गंध दूर होती है और जीवाणुओं की वृद्धि में भी कमी आती है।

### उपयोग :

एक कप में 1 या 2 चम्मच फ्रेसिया माउथ वाश डालें और बिना पानी मिलाये इसे मुँह के अन्दर डालें। मुँह को बंद रखें ताकि माउथ वाश मुँह के बाहर नहीं गिरे। अब, मुँह के अन्दर इसे खूब हिलाएं। 30 से 60 सेकण्ड तक मुँह के अन्दर इस प्रकार गार्गल या कुल्ला करें कि इसका स्पर्श बार-बार सभी दांतों, जीभ के ऊपर और नीचे सभी जगह हो सके। ध्यान रखें कि इसे पीना नहीं है। अंत में इसे बाहर सिंक में थूक दें।



Chlorhexidine gluconate

Sodium fluoride

Zinc chloride Solution

पैक: 150ml

# मोशल प्रोटेक्टो



सेलफोन के लगातार इस्तेमाल से कई प्रकार की बीमारियाँ हो सकती है, जैसे— सरदर्द, कमजोर याददाश्त, कान के दर्द, बहरापन, थकान, धुन्धला दिखना, नामर्दगी, अस्थिर मन, मिचली, शारीरिक कमजोरी, अधकपारी, तनाव, ब्रेन ट्यूमर, कैंसर आदि।

“प्रोटेक्टो” के साथ मोबाइल के इस्तेमाल से इन बीमारियों के होने की सम्भावना कम हो जाती है



## प्रोटेक्टो के उपयोग से लाभ

- मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, माइक्रो वेव ओवन, टी0बी0, फ्रिज, एण्सीण एवं अन्य इलेक्ट्रानिक उपकरणों से निकलने वाले खतरनाक चुंबकीयतरंग से शरीर की रक्षा करता है।
- कान के अन्दर 97% इलेक्ट्रोमैग्नेटिक किरणों को जाने से रोकता हैं।
- मेमोरी पॉवर कमजोर नहीं होने देता है।
- इलेक्ट्रोमैग्नेटिक किरणों से बचाता है।
- अनिद्रा की शिकायत दूर करता है।
- श्रवण शक्ति बढ़ाता है।

उपयोग विधि: “प्रोटेक्टो” का उपयोग अत्यंत सरल है—, पैकेट से निकालें और उपकरण में चिपका दें।



गठिया की समस्या से निजात दिलाने में सहायक। मानसिक तनाव और मांस पेशियों के दर्द से छुटकारा दिलाने में लाभकारी। रक्त चाप (BP) को नियंत्रित करने में सहायक। रक्त संचार को सुचारु रूप से संचालित (एक्टिवेट) करने और जीवनदायी ऊर्जा को बढ़ाने में उत्तम। कैंसर और ट्यूमर की वृद्धि रोकने में सक्षम। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में कारगर। शरीर में चयापचय (मेटाबोलिज्म) की प्रक्रिया को सुचारु करता है। रक्त संचालन को बेहतर बनाता है। बढ़ते उम्र के प्रभावों जैसे झाई, झुर्रियों को कम करता है। रक्त को शुद्ध करता है। कोशिकाओं का फिर से नवीनीकरण (रीस्टोर) करता है। स्नायु पीड़ा से मुक्ति दिलाता है।

### मैग्नेटिक ब्रेसलेट के लाभ

- ❖ हड्डियों को मजबूत करता है
- ❖ जोड़ों के दर्द और आर्थराइटिस से बचाव करता है
- ❖ तनाव व कमजोरी से हो रहे सिरदर्द को कम करता है
- ❖ पाचन तंत्र स्वस्थ रखता है
- ❖ रक्त चाप नियंत्रित करता है
- ❖ रक्त का संचार तेज करता है
- ❖ मांस पेशियों में आये चोट का असर कम करता है
- ❖ जहरीले तत्वों को दूर करता है
- ❖ शरीर को स्वस्थ और रोग मुक्त रखता है
- ❖ अच्छी नींद लाने में सहायक।



*Wish You Healthy & Wealthy Life*

